International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 9 Issue – 1 January-June 2021 (Special Issue)
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

राजस्थान के मरू प्रदेश का ग्रामीण पर्यटन : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. मानवेन्द्र, *भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।*

पर्यटन व्यवसाय बहु आयामी होने के कारण इसके स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। देशी व विदेशी पर्यटक किसी विशेष उद्देश्य को लेकर अपना भ्रमण कार्यक्रम आयोजन करते हैं। इसमें से कुछ भ्रमण प्रायोजित या पूर्व आयोजित होते हैं जिसमें किसी विशेष विषय पर विशेषज्ञ के रूप में भाग लेने के लिए देशी व विदेशी हस्तियों को आमंत्रित किया जाता है। ऐसे भ्रमण स्थानीय राज्य या देश के भीतर आयोजित होने वाले विशेष कार्यक्रमों से संबंधित होते हैं और आने वाले पर्यटक स्थान विशेष के साथ समय की सुविधा होने से समीपवर्ती क्षेत्रों का भी भ्रमण करते हैं। स्वयं निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पर्यटक छोटे या बड़े समूहों में यात्रा करते हैं और अपने कार्यक्रम के अनुसार पर्यटक छोटे या बड़े समूहों में यात्रा करते है और अपने कार्यक्रम का निर्धारण स्वयं या एजेसियों के माध्यम से कराते हैं। पर्यटन व्यवसाय के विशाल तंत्र के निर्मित होने से इस क्षेत्र में काम करने वाली एजेंसियां पर्यटकों की सारी व्यवस्थाएं स्वयं कर देती हैं और पर्यटक निश्चिंत होकर अपनी यात्रा करते हैं। एजेसियां प्रायः हवाई यात्रा के आयोजन, होटलों में आरक्षण और गाड़ियों की बुकिंग भी अपने स्थान से करते हुए पर्यटकों को सारे पत्रादि सौंप देते हैं जिसके अनुसार पर्यटक अपने भ्रमण कार्यक्रम का आनन्द उठाते हैं।

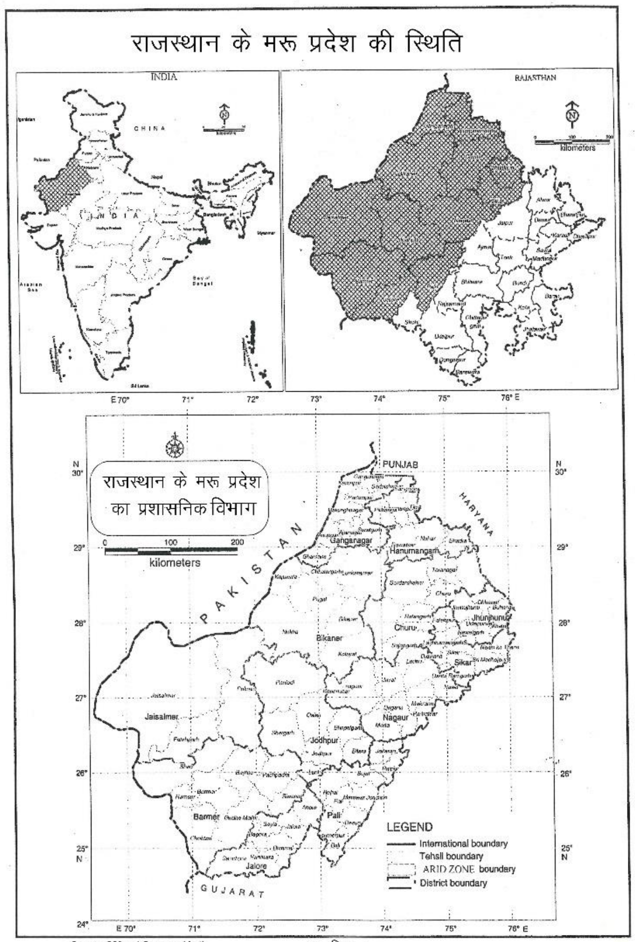

Source: SOI and Census of India

मानचित्र–1

पर्यटन क्षेत्र में विविधता के कारण बहुत से पर्यटक शान्त और सुरम्य स्थानों की तलाश करने लगे हैं। इसका कारण व्यक्तियों की व्यस्त दिनचर्या कार्य स्थल व घरेलू समस्याएं और बढ़ते हुए दायित्व व तनावपूर्ण जिन्दगी भी हैं। मनुष्य सुबह से देर रात तक एक मशीन के रूप में कार्य करता है जिससे उसकी दिनचर्या एक नीरस और व्यस्त जिन्दगी बन जाती है। बहुत से मनुष्य कठिन परिश्रम करके बड़े बड़े प्रतिष्ठान स्थापित कर लेते है और इन सभी के संचालन में अपनी सापेक्ष्य भूमिका से विशाल धन एकत्रित कर लेते हैं। इन सभी समस्याओं व परेशानियों के बीच कुछ क्षण आराम के लिए निर्धारित करना आज एक आवश्यकता बन गई है पर्यटक के क्षेत्र में बढ़ोतरी से यह परिकल्पना भी समाप्त हो गई है कि केवल धनी व्यक्ति ही पर्यटन करते हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं और सपनों को साकार करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति एक ताना बाना बुनता है परन्तु यह भी सत्य है कि सभी व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाते। इस दौड़ में कुछ व्यक्ति एक अल्प समय में ही अपनी सोच से भी ऊपर उठ जाते हैंय कुछ को इस उत्कर्ष तक पहुंचने मे अधिक समय भी लगता है और कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जो अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाते हैं। इन सभी श्रेणियों के व्यक्तियों के लिए कुछ श्रण विश्राम के लिए निकालना एक आवश्यक आवश्यकता बन जाती है। विश्राम के क्षणों में

चरमोत्कर्ष पर पहुंचे व्यक्ति भी मनन करते है और अपने व्यवसाय को और अधिक बढ़ाने का सोचते हैं। जो व्यक्ति अपने उद्देश्यों में पूर्णतया शिखर तक नहीं पहुंच पाये वे खाली समय में अपनी कमियां दूर करने और नए उत्साह से शुरुआत करने का मानस बनाते हैं। असफल या अर्द्ध सफल व्यक्ति अपने प्रयास नए सिरे से प्रारंभ करने या अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन का भी सोचते हैं अतः यह भी कटु सत्य है कि पर्यटक अपने कार्यस्थल से दूर रहकर भी अपने ताने बाने से जुड़े रहते हैं।

पर्यटन का समय लोग आनन्द व मनोरंजन के साथ अपनी नीति निर्माण व नए सोच विकसित करने में भी लगाते हैं और कई बार वे अपने प्रयास में अभूतपूर्ण सुलभता भी अर्जित कर लेते हैं। अतः पर्यटक बाहर रहकर भी अपने आसपास के वातावरण व परिशानियों से पूर्णतया मुक्त नहीं हो पाते हैं और अपने कार्यक्षेत्र से दूर रहकर भी उनका दिमाग अपने परिवेश से ही जुड़ा रहता है। इस दृष्टि यह भी कटु सत्य है कि पर्यटक अपने भीड़ भाड़ के वातावरण से निकलकर शान्त व निर्जन क्षेत्र भी पसन्द करने लगे है जहां वे स्थानीय परिवेश व स्वयं के परिवेश के मध्य सामंजस्य बनाते हुए कुछ नया करने की अपनी सोच विकसित करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। इस दृष्टि से जितना उपयुक्त समुद्र का तटवर्ती क्षेत्र होता है, मरुस्थलीय क्षेत्र भी उतना ही शांत, रोमांचक व मनोरंजक होता है। पर्यटकों की मरुप्रदेश में बढ़ती जनसंख्या का स्वरूप का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि पर्यटक अपने चिन्तन व मनोरंजन का ऐसा स्थल चाहता है जहां उसे कुछ नया देखने का कौतूहल हो और इसके साथ ही उसे पूर्ण विश्राम भी मिले। इस दृष्टि से ग्रामीण पर्यटन एक अभिनव आयाम है।

ग्रामीण व शहरी परिवेश में कई मूलभूत अन्तर होते हैं शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है, भीड़भाड़ चारों ओर दिखाइ देती है परन्तु सभी सुविधाएं व सेवाएं सुनियोजित होती हैं। पर्यटन के क्षेत्र में शहरों की अपनी महत्ता है। पर्यटन के संबंध में वस्तुस्थिति भी यह है कि अधिकांश पर्यटन स्थल शहरों या कस्बों में ही अवस्थित होते हैं। मानव जीवन का विकसित स्वरूप शहर है जहां प्रशासन, सेवाएं, सुविधाएं आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं। ग्रामीण क्षेत्र प्रायः अधिकांश सुविधाओं व सेवाओं से वंचित होता है। शहर हमारी सभ्यता व संस्कृति के प्रतीक होते हैंऔर देश का विकास शहरों में ही दृष्टिगोचर होता है। दुनियां के सभी देशों के गांव शहरों की तुलना में कम सम्पन्न व विकसित होते हैं। इसका एक बढ़ा कारण सुविधाओं के उपयोग करने वालों की संख्या है।

सुचना प्रौद्योगिकी के विस्तार के कारण ग्रामीण परिवेश में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है। टेलीविजन व टेलीफोन सुविधाएं सर्व–सुलभ होने से गांवों की सामाजिक व सांस्कृतिक अवस्थिति में परिवर्तन की गति तेजी से बढ़ी हैं परिवहन प्रणाली में सुधार से सुविधाओं की पहुंच में काफी वृद्धि हुई है। इन सभी परिवर्तनों व विकसित स्वरूप के उपरान्त भी ग्रामीण व शहरी परिवेश दो भिन्न भिन्न स्थितियां हैं जिनमें मौलिक व व्यावहारिक परिवर्तन विद्यमान है और बने रहेंगे। शहरी क्षेत्रों में जहां जनसंख्या व उसका घनत्व अधिक होता है, ग्रामीण क्षेत्र में छितरापन, जनसंख्या की सीमितता होती है। इन सबसे भिन्न ग्रामीण व शहरी स्वरूप का अन्तर व्यवसाय से है। हमारे देश में ग्रामीण क्षेत्र उसे कहा जाता है जहां 75 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति कृषि कार्य से जुड़े होते हैं। शहरी क्षेत्रों में उपरोक्त स्थिति के विपरीत कृषि के स्थान पर प्रंसस्करण, व्यापार, व्यवसाय, राजकीय कार्यालय, निजी कार्यालय, उद्योग धंधे व सेवातंत्र के स्थल होते हैं। शहरों में जहां तड़क–भड़क, मनोरंजन के साधन, गतिमान जीवन आदि देखने को मिलते है वही ग्रामीण क्षेत्र इन सबसे वंचित परन्तु प्रकृति व प्राकृतिक वातावरण से बहुत करीब होते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की एक विशिष्टता यह होती है कि शहरी क्षेत्र में आवंटित भूमि के अतिरिक्त सारा क्षेत्र ग्रामीण सीमा में लिया जाता है जिसमें वन, कृषि के लिए अनुपयुक्त भूमि, बंजर व गैर–खेतीयोग्य भूमि, स्थाई चरागाह, विविध पेड़ों के अन्तर्गत क्षेत्र, पड़त भूमि, खेती योग्य बेकार भूमि और कृषि के अन्तर्गत क्षेत्र आते हैं जबकि शहरी क्षेत्र में आने वाली अधिकांश भूमि रिहाइसी, व्यापारिक व व्यावसायिक होती है जिसमें उद्योगों के लिए आवंटित क्षेत्र भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में बड़ा अन्तर भूमि उपयोग को लेकर होता है। मरु प्रदेश में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र का विवरण सारिणी सं. 1 में दर्शाया गया है।

सारिणी सं. 1
ग्रामीण व शहरी क्षेत्र का जिलेवार विवरण
(वर्ग किलोमीटर) 2001

क्रम संख्या	जिला	कुल भौगोलिक क्षेत्र (वर्ग किमी)	मरु प्रदेश का प्रतिशत	ग्रामीण क्षेत्र (वर्ग किमी)	कुल क्षेत्र का प्रतिशत	शहरी क्षेत्र (वर्ग किमी)	कुल क्षेत्रफल प्रतिशत
1.	बाड़मेर	28387.00	13.60	28327.71	99.79	59.29	0.21
2.	बीकानेर	27244.00	13.05	27059.16	99.32	184.84	0.68
3.	चुरु	16830.00	8.06	166638.77	98.86	191.23	1.14
4.	गंगानगर	10931.89	5.23	10855.39	99.30	76.50	0.70
5.	हनुमानगढ़	9702.11	4.65	9663.89	99.61	38.22	0.39
6.	जैसलमेर	38401.00	18.40	38266.73	99.65	134.27	0.35
7.	जालौर	10640.00	5.10	10592.31	99.55	47.69	0.45
8.	झुंझुनू	5928.00	2.84	5786.30	97.61	141.70	2.39
9.	जोधपुर	22850.00	10.95	22641.40	99.09	208.60	0.91
10.	नागौर	17718.00	8.49	17448.72	98.48	269.28	1.52
11.	पाली	12387.00	5.93	12074.47	97.48	312.53	2.52
12.	सीकर	7732.00	3.70	7540.31	97.52	191.69	2.48
	योग	208751.00	100.00	206895.16	99.11	1855.84	0.89

स्त्रोतः स्टेटिस्टिकल एब्सट्रेक्ट 2002 राजस्थान

उपरोक्त सारिणी में अंकित सूचना का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि मरु प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से शहरी क्षेत्र 0.89 है और ग्रामीण क्षेत्र 99.11 भाग में फैला हुआ है। शहरी क्षेत्र में कुल 86 शहर और कस्बे स्थापित है अतः औसतन इनका क्षेत्र 2.16 वर्ग किलोमीटर

है। मरु क्षेत्र में 15323 गांव है जिनका औसत क्षेत्र 13.50 वर्ग किलोमीटर है। इन जिलों की कुल जनसंख्या, शहरी व ग्रामीण जनसंख्या व जनसंख्या का घनत्व सारिणी सं. 2 में दर्शाया गया है जिससे प्रतिवर्ग किलोमीटर शहरी व ग्रामीण जनसंख्या का विवरण इंगित होता है।

सारिणी सं. 2

जिलों की कुल जनसंख्या, शहरी व ग्रामीण जनसंख्या व जनसंख्या का घनत्व

क्रम संख्या	जिला	कुल जनसंख्या	घनत्व	ग्रामीण जनसंख्या	घनत्व	शहरी जनसंख्या	घनत्व
1.	बाड़मेर	1964835	69	1819431	64	145404	2452
2.	बीकानेर	1674271	61	1079235	40	595036	3219
3.	चुरु	1923878	114	1387682	83	536196	2804
4.	गंगानगर	1789423	224	1336066	123	453357	5926
5.	हनुमानगढ़	1518005	120	1214467	125	303538	7942
6.	जैसलमेर	508247	13	431853	11	76394	569
7.	जालौर	1448940	136	1338946	126	109994	2306
8.	झुंझनू	1913689	323	1518573	262	395116	2788
9.	जोधपुर	2886505	126	1909423	84	977082	4684
10.	नागौर	2775058	157	2297721	132	477337	1773
11.	पाली	1820251	147	1429364	118	390887	1251
12.	सीकर	2287788	296	1815250	241	472538	2465
	योग	22510890	108	17578011	85	4932879	2658

स्त्रोतः जनगणना 2001

उपरोक्त सारिणी की सूचना से स्पष्ट है कि मरुप्रदेश में जनसंख्या का घनत्व मात्र 108 व्यक्ति प्रति किलोमीटर हैं जो राजस्थान के 165 व भारत देश के 324 की तुलना में बहुत कम है परन्तु मरु प्रदेश में भी शहरी जनसंख्या का केन्द्रीकरण 2658 व्यक्ति प्रति किलोमीटर है जबकि ग्रामीण क्षेत्र का घनत्व मात्र 85 व्यक्ति ही है। इनमें जैसलमेंर जिला सबसे कम जनसंख्या घनत्व का क्षेत्र है। क्षेत्रफल की दृष्टि से मरुप्रदेश के जैसलमेर जिले के 18.40 प्रतिशत भू–भाग में 2.26 प्रतिशत आबादी है और घनत्व मात्र 13 व्यक्ति प्रति किलोमीटर है जो ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 11 है। इस प्रकार यह परिलक्षित होता है कि मरु प्रदेश देश के 6.35 भू–भाग में फैला है जहां मात्र 2.19 प्रतिशत देश की जनसंख्या निवास करती है। इस प्रदेश की अन्य कई विशेषताएं भी है जो सारिणी सं. 3 में दर्शायी गई है।

सारिणी सं. 3

मरु प्रदेश में स्त्री–पुरुष अनुपात जनसंख्या वृद्धि दर व साक्षरता दर

क्र. स.	जिला	स्त्री–पुरुष	अनुपात	जनसंख्या वृद्धि दर		साक्षरता दर			साक्षरता दर ग्रामीण		
		1991	2001	1981–91	1991–2001	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
1.	बाड़मेर	891	896	28.27	36.83	59.65	73.64	43.91	58.14	72.15	42.43
2.	बीकानेर	885	889	42.70	38.18	57.54	70.78	42.55	46.33	61.92	28.83
3.	चुरु	937	948	30.84	24.60	66.97	79.52	53.87	65.29	78.63	51.45
4.	गंगानगर	877	873	18.25	27.53	64.84	75.49	52.69	60.39	72.00	42.27
5.	हनुमानगढ़	891	895	44.60	24.34	65.72	77.41	52.71	63.65	75.97	50.01
6.	जैसलमेर	807	821	41.73	47.45	51.40	66.89	32.25	47.02	63.09	27.45
7.	जालौर	942	968	26.52	26.78	46.51	65.10	27.53	44.81	63.52	25.88
8.	झुंझुनू	931	946	30.61	20.90	73.61	86.61	60.10	73.24	86.36	59.80
9.	जोधपुर	891	908	29.12	33.77	57.38	73.86	39.18	46.88	66.94	25.10
10.	नागौर	942	951	31.69	29.33	58.26	75.33	40.45	55.92	73.66	37.58
11.	पाली	956	983	16.63	22.39	54.92	73.06	36.70	50.39	69.39	31.76
12.	सीकर	946	951	33.81	24.11	71.19	85.20	56.70	70.39	84.74	55.70
	योग	910	922	28.44	28.33	61.03	76.46	44.34	55.92	72.96	37.74

स्त्रोत : जनगणना 2001

मरु प्रदेश की जनसंख्या पर विश्लेषण विलक्षणता से भरा है। पूरे मरुप्रदेश में स्त्री–पुरुष अनुपात वृद्धिपरक है परन्तु आधे जिलों में यह सामान्य सामाजिक व्यवस्था की ओर अग्रसर है और आधे जिलों में विसंगति जारी है। सबसे अधिक असामान्य स्थिति जैसलमेर जिले की है और सबसे अनुकूल स्थिति पाली जिले की हैं। जनसंख्या वृद्धि दर इस क्षेत्र में काफी विचलित है और इसे रोकने या कम करने के प्रभाव सामान्यतथा अप्रभावी प्रतीत होते हैं। जेसलमेर में जहां जनसंख्या वृद्धि दर विस्फोटक है वहीं झुंझुनू जिले में आश्चर्यजनक रूप में इसमें कमी आई हैं गंगानगर और पाली जिले की वृद्धि के नतीजे सामान्य प्रक्रिया से विचलन की ओर अग्रसर हैं। मरुप्रदेश में स्थानीय समस्याओं के उपरान्त भी साक्षरता दर में वृद्धि का झुकाव दृष्टिोचर हो रहा है महिला साक्षरता दर कुछ जिलों में काफी बढ़ी है पर कुछ जिले अभी भी धीमी रफतार में हैं।

उपरोक्त भौगोलिक व सामाजिक परिवेश की पृष्ठभूमि में ग्रामीण पर्यटन का विवेचन करने का उद्देश्य यह तथ्य उजागर करता है कि मरु प्रदेश अपेक्षाकृत शान्त और नीरव क्षेत्र है। ग्रामीण पर्यटन इस व्यवसाय की गई विधा है जिस ओर अग्रसर होने के कई कारण हैं। मरुप्रदेश का ग्रामीण क्षेत्र काफी विस्तृत है और इसमें प्राकृतिक सौन्दर्य भरा पड़ा है जहां के शान्त वातावरण में पर्यटक अपनी चिन्ताओं ओर परेशानियों से मुक्त होकर नवीन आशाओं का संचार करता है। मरु प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन की विशेषताएं जो पर्यटक को इस क्षेत्र में भ्रमण करने के लिए प्रेरित करती हैं निम्न प्रकार है

(1) थार का मरुस्थल विश्व के अन्य मरुस्थलों की भांति सभी विषम परिस्थितियों से पूर्ण हैं परन्तु जनसंख्या का घनत्व अन्य मरुस्थलों की तुलना में काफी अधिक है। इसका एक कारण जनसंख्या बाहुतय भी है जो अन्य मरुस्थलीय क्षेत्रों में इतना समस्याकारक नहीं है। इन सभी परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में देशी व विदेशी पर्यटकों में यह कौतूहल होना स्वाभिवक है कि यहां मानव जीवन किस प्रकार संभव है।

(2) मरु प्रदेश में अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या खेती पर आश्रित है खेती के साथ पूरक व्यवसाय के रूप में पशुपालन भी किया जाता है जिससे यहां के निवासियों का जीवन–यापन संभव हो जाता है। अधिकांश कृषि मानसून पर आधारित है और वर्षा बहुत कम व असामान्य रहती है इससे खेती में अनिश्चितता रहती है। पशुपालन के लिए यहां चारे की काफी समस्या हो जाती है जिससे पशुधन को सुरक्षित रख पाना कई बार बहुत दुष्कर हो जाता है।

(3) भेड़ व बकरी इस क्षेत्र में बहुतायत में है जिन्हें इनके मालिक झुण्ड में प्रदेश से बाहर ले जाते हैं। इनके लिए मार्ग निर्धारित है और प्रतिवर्ष इन्हीं मार्गों से चलते हुए पशुपालक अपने मवेशियों को समीपवर्ती राज्यों–मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा में चराई के लिए ले जाते हैं। ये पशुपालक मार्ग में दूध व मवेशियों की खाद से जीविका चलाते हैं और प्रायः समृद्ध हैं। प्रति इकाई मवेशियों की संख्या औसतन 500 होती है।

(4) दुधारू पशुओं को अपने घरों पर ही रखकर इनके चारे की व्यवस्था करते हैं। इनमें गाय व भैंस प्रमुख हैं। सामान्य स्थिति में पशुओं के लिए चारा कृषि कार्य से उपलबध हो जाता है परन्तु मानसून असफल होने पर स्थिति कष्टसाध्य हो जाती हैं यहां अन्य स्थानों की तुलना में दुधारू पशुओं का दुग्ध उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक है और यह आश्चर्यजनक सत्य है कि मरुप्रदेश में ग्रीष्मकाल में दुधारू पशुओं की दुग्ध क्षमता बढ़ जाती है। यह व्यवसाय यहां के निवासियों का जीवन आधार है। जिन क्षेत्रों में आवागमन के साधनों से दुग्ध संग्रहण संभव है, वहां दुधारू पशुओं की संख्या अधिक होती है और दुग्ध सहकारी समितियां इन्हें उननत चारा भी उपलबध कराती है जिससे इनका व्यवसाय सुचारू रूप से चलता है।

(5) अकाल यहां की एक निरन्तर प्रक्रिया है। औसतन 5 वर्ष के मानसून चक्र में दो वर्ष बहुत खराब रहते हैं। दो वर्ष सामान्य होते है और एक वर्ष बहुत अच्छा होता है। अच्छे मानसून आगमन पर पैदावार भरपूर होती है जिसे यहां के कृषक स्थानीय तकनीक से सुरक्षित रखते है जो प्रायः आगामी दो वर्ष के लिए बना रहता है। चारा संचय करना इतना सम्भव नहीं होता इसलिए यहां के पशुपालक सरकारी व्यवस्था पर निर्भर हो जाते हैं।

(6) पूरे मरु प्रदेश में पेयजल की सुचारु व्यवस्था कर दी गई है । गर्मी के मौसम में प्रायः कठिनाई हो जाती है जब पेयजल टैंकरों के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है। यहां के निवासी अधिकांशतः जल संग्रहण टांको में करते हैं जिससे इन्हें सरकारी व निजी माध्यम से पेयजल की विषम स्थिति का प्रायः सामना नहीं करना पड़ता है।

(7) मरु प्रदेश में अधिकांश स्थानों पर पेयजल व सिंचाई के लिए पानी भूमिगत स्त्रोतों से संभव होता है जो बहुत गहराई पर होते हैं। इस क्षेत्र में कुछ स्थानों पर भूमिगत स्त्रोतों का पता लगने से पानी की उपलबधता हो जाती है परन्तु ऐसे स्त्रोत बहुत कम मात्रा में है। यहां के लोगों की परम्परागत व्यवस्थाएं पेयजल व सिंचाई जल की सुविधा के लिए कुछ हद तक संभव होने लगी है।

(8) शुष्क खेती और ओस से खेती की तकनीक जनसाधारण तक पहुंचने के कारण यहां खेती की प्रणाली विकसित हुई है और लोग अपने संसाधनों के अनुसार कृषि क्षेत्र में निरन्तर विकास हुआ है और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप खेती कार्य सुचारु हुआ है। इससे इस क्षेत्र में जीवन खुशहाली की ओर अग्रसर होने लगा है। कृषि की उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है।

(9) कृषि कार्य में विविधता लाते हुए यहां के कृषक लाभकारी व कम पानी में उपजने वाली फसलों की ओर अग्रसर हुए हैं जिससे जीवन में स्थायित्व आया है। यहां के निवासी कष्ट साध्य जीवन के आदी है और कठिन परिश्रम करके कृषि कार्य करते हैं। कृषकों को नई तकनीक व विविधता के द्वारा इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसले उगाने में महारथ हासिल कर ली।

(10) मरु क्षेत्र में भूमि काफी संख्या में होने के कारण औसत जोत बड़ी है। पानी का साधन होने पर यहां फसल बहुत अच्छी हो जाती है। अधिक क्षेत्र में कम उत्पादकता के बावजूद कृषक अपनी आवश्यकता के लिए अन्न उपजा लेता है। गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर व जैसलमेर जिलों का क्षेत्र नहरी प्रणाली से जुड़ने के कारण यहां खुशहाली आई है। गंगानगर व हनुमानगढ़ का बाकी बड़ा भाग नहरी प्रणाली से जुड़ा है कई वर्षों से सिंचाई उपलबध होने से यहां जल रिसाव की समस्या हो गई है।

(11) मरु प्रदेश का बहुत बड़ा क्षेत्र रेतीले टीलों व बालुका स्तूपों से भरा पड़ा है। ये टीले एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित होते रहते हैं और वायु वेग से अपनी स्थिति व दिशा भी बदल लेते हैं। नहरी क्षेत्रों में टीले प्रायः स्थिर हो गए है और पूरी भूमि समतल मैदान के रूप में दृष्टिगोचर होती है। टीलों के स्थिरीकरण के क्षेत्र में भी प्रयास काफी हद तक सफल हुए है जिससे इस क्षेत्र की भू–भौतिकी में स्थायित्व आया है परन्तु अभी भी बहुत बड़ा मरुस्थल के टीलों से भरा पड़ा है।

(12) यह क्षेत्र अत्यन्त शान्त और नैसर्गिक है अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्र पूर्णतया प्रदूषण से मुक्त है यहां न शहरों की भीड़भाड़ है और न ही भागदौड़ है। यहां जनजीवन बहुत साधारण है और लोग मिलनसार प्रकृति के हैं। पर्यटकों की आवभगत बड़े प्रेम से करते हैं और मुक्त रूप से मिलते हैं। इस प्राकृतिक, मनोरम और शान्त वातावरण की चाहत अधिकांश देशी–विदेशी पर्यटकों की रहती है और वे यहां आकर बहुत सुकून अनुभव करते हैं।

(13) यहां के लोगों की वेशभूषा व व्यक्तित्व बहुत आकर्षक है। पुरुष अधिकांशतः हष्ट पुष्ट, लम्बे चौड़े, परम्परागत पगड़ी, अंगरखी व धोती पहनते है तथा पैरो में देशी जूता पहनते है जो वेशभूषा यहां के वातावरण के लिए पूर्णतः अनुकूल है। महिलाओं के वस्त्र गहरे रंग के व आकर्षक होते हैं तथा सामान्य पहनावा बड़ा आकर्षक लगता हैं मरुस्थल के कष्टसाध्य वातावरण के उपरान्त पुरुष व स्त्री काफी ओजस्वी होते हैं।

(14) पूरा मरुप्रदेश पर्यटन के लिए बहुत ही उपयुक्त है क्योंकि इसमें मरुस्थल व बालुकास्तूपों के अलावा बहुत से अजूबे हैं। विशाल टीलें, मरुस्थल में तालाब, वन्यपशु पक्षी, दूर तक निर्जन क्षेत्र आदि ऐसे आकर्षण है जो पर्यटकों के कौतूहल को शान्त करने के बदले अधिक बढ़ाते है और यहां आकर पर्यटक ऐसी विचित्र स्थितियों की जानकारी पाते है जो मौलिक व रोचक होती हैं।

(15) मरु प्रदेश का एक महत्वपूर्ण आकर्षण ऊंट है जो यहां बहुतायत से पाया जाता है। यहां के लोग ऊंटों के विविध करतब दिखाते है और ऊंट पर बिठाकर पर्यटकों को मनोरम स्थलों की सैर भी कराते हैं। यहां आने वाले अधिकांश पर्यटक ऊंट की सवारी का आनन्द लेते है जिससे यहां के निवासियों की रोजगार के अवसर भी मिलने लगे हैं।

(16) मरु प्रदेश दुनिया भर के पर्यटक स्थलों में विशेष स्थान रखता है। सामान्यतया पर्यटकों के जन धन हानि की घटनाएं यहां नगण्य है लोग ईमानदार व आवभगत में विश्वास करके पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। यहां आने वाले पर्यटक एक विचित्र आनन्द की अनुभूति करते है और अपने साथ यहां की मधुर स्मृतियां लेकर जाते हैं।

(17) सरकार द्वारा इस क्षेत्र के बारे में समुचित प्रचार प्रसार से मरुप्रदेश दुनियां भर के पर्यटन मानचित्र पर उभरा है। सरकार भी अपनी ओर से विभिन्न उत्सवों व मेलों का बढ़चढ़ कर आयोजन करती है जिसमें पर्यटकों के लिए विचित्र किस्म के मनोरंजन कार्यक्रम किए जाते हैं जो अन्यत्र संभव नहीं है। पर्यटक इन कार्यक्रमों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

(18) मरुक्षेत्र की विरासत संस्कृति व सभ्यता भी काफी रोचक है। मेलों में लोग उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। धार्मिक स्थलों पर स्थानीय लोगों की बड़ी संख्या में उपस्थिति पर्यटकों को यह सोचने के लिए विवश करती है कि उत्सवों में यहां के निवासी समस्त प्राकृतिक व भौगोलिक परिस्थितियों के उपरान्त भी बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं। धार्मिक स्थलों पर पारम्परिक कार्य जैसे जडूला, मुण्डन, नारीयल चढ़ाना, प्रसाद भेंट करना आदि ऐसे कृत्य है जिन्हें पर्यटक आश्चर्य चकित होकर निहारते हैं।

उपरोक्त बिन्दु ग्रामीण पर्यटन के एक उदाहरण मात्र है इसके अतिरिक्त भी बहुत से दृश्य व कृत्य पर्यटकों के लिए आकर्षक आश्चर्य होते हैं। इसी प्रकार की विचित्रताओं में स्थान स्थान पर चबूतरे या पेड़ के तने से सटी कुछ मूर्तियां, माण्डने भित्तिचित्र ऐसे उदाहरण है जिनकी पृष्ठभूमि पर्यटक जानना चाहते हैं। यहां पर्यटकों की आवभगत साफा पहनाकर, तिलक व आरती उतारकर करना पुरुष व महिला पर्यटकों को उत्साह से ओतप्रोत कर देता है।

1 फार्म ट्यूरिज्म

फार्म ट्यूरिज्म फार्म हाउस संस्कृति का ही परिस्कृत स्वरूप है। कृषि भूमि खरीदना और उसमें फार्म हाउस बनाना मूलतः आयकर प्रणाली की देन है। आयकर के अन्तर्गत हमारे देश में कृषि व्यवसाय को मुक्त रखा गया है। इसी श्रृंखला में कृषि से होने वाली असीमित आय भी कर मुक्त होती है। इस आकर्षण ने बड़े बड़े व्यावसायिक घरानों को कृषि भूमि खरीदने के लिए प्रेरित किया। कृषि क्षेत्र में विनियोजन हरित क्रांति से भी जुड़ा हुआ है। इस सुविधा का लाभ उठाकर बहुत से व्यावसायिक घरानों, व्यावसाइयों, व अधिकारियों, राजनेताओं और काला धन एकत्रित करने वाले लोगों में कृषि भूमि खरीदकर फार्म हाउस विकसित करने की परम्परा डाली। कृषि उपज आयकर मुक्त होने के कारण कृषि भूमि खरीदने व इसमें खेती कर अपने काले धन को कृषि उपज की आय दिखाकर नियमित करना एक संस्कृति के रूप में विकसित हुआ। कृषि भूमि पर फार्म हाउस बनाना एक वैभव की निशानी बन गया जहां अपने पारिवारिक आमोद प्रमोद के साथ, व्यावसायिक संबंध व सुख सुविधा केन्द्र के रूप में इन्हें विकसित करना एक हैसियत की निशानी बन गया। यह संस्कृति इतनी तेजी से विकसित हुई है जिसके चलते सड़क के किनारे की भूमि का मूल्य बढ़ने लगा और बंजर व ऊसर जमीन खरीदना भी आरंभ हो गया। आज कृषि भूमि व फार्म हाउस संस्कृति अपने चरम पर है क्योंकि इससे मनोरंजन व ऐश आराम के साथ दूरगामी धन विनियोजन व अन्य क्षेत्रों की आय कृषि से प्राप्त होना दर्शाना एक समृद्ध व्यवसाय बन गया है। इसी संस्कृति के अन्तर्गत पर्यटन उद्योग श्रेणी के लाभ उठाकर फार्म ट्यूरिज्म विकसित हुई है।

फार्म ट्यूरिज्म एक ऐसा व्यवसाय बना है जिसमें कृषि भूमि पर एक आलीशान भवन बनाकर पर्यटकों की सुख–सुविधा की आवश्यक सभी सुविधाएं जुटाकर ऐसा स्थल तैयार करना जहां पर्यटक शहर की भीड़भाड़ से दूर रहकर मनोरंजन व विश्राम कर सके। इस व्यवसाय ने तेजी से गति पकड़ी है और राष्ट्रीय राजमार्गों व राज्य राजमार्गों पर ऐसे बहुत से स्थल विकसित हुए हैं जिसमें पर्यटक राह चलते अपनी सुविधानुसार रुककर विश्राम व मनोरंजन करने लगे हैं। पर्यटन नेटवर्क से जोड़कर आप यहां पहले से ही आरक्षण की सुविधाएं मिलने से पर्यटक इसं अपने निर्धारित कार्यक्रम में ही जोड़ लेते हैं। इस व्यवस्था से देशी व विदेशी पर्यटक शहरी भव्य होटलों के स्थान पर यहां रुककर अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हैं और यह व्यवसाय पर्यटन व्यवस्था का एक आवश्यक अंग बन गया है। फार्म ट्यूरिज्म के रूप में स्थल का विकसित करना, समीपवर्ती क्षेत्र विकसित करना व टेक्नोलोजी का उपयोग कर विविध प्रकार की आवश्यक व्यवस्थाएं करना एक सुव्यवस्थित स्वरूप बन गया हैं इन स्थलों का आकर्षण पर्यटकों को शहर के वातावरण के बदले इन स्थानों का चयन करना उपयुक्त लगने लगा हैं यह व्यवस्था सभी विकसित व विकासशील देशों में विकसित हुई है और इस के अपने कुछ मूलभूत आकर्षण भी है जिनसे पर्यटक इन स्थलों की ओर आकर्षित हो रहा है और यह व्यवसाय तेजी से फलफूल रहा है। फार्म ट्यूरिज्म को सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने के लिए इसके विभिन्न स्वरूपों का प्रबंधन व इसके लाभकारी बनाने के लिए निम्नलिखित अर्हताओं की उपस्थिति महत्वपूर्ण है। फार्म ट्यूरिज्म विकसित होने के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

(1) फार्म ट्यूरिज्म स्थल शहरों की भीड़भाड़ से दूर नैसर्गिक स्थलों पर बने होते हैं या इन्हें इस प्रकार विकसित किया जाता है कि पूर्ण परिदृश्य आकर्षक व मनोरंजक लगे। ऐसे स्थल प्रायः छोटे होते है जिसमें सामान्यतया पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था की जाती है। इन स्थलों पर बड़े प्रायोजित ग्रुप के स्थान पर छोटे समूह ठहराए जा सकते हैं। इन स्थलों पर प्रायः युगल ठहरना श्रेष्ठ समझते है जो अपने क्षणों को आपस में मिल बांटना चाहते हैं।

(2) फार्म ट्यूरिज्म में प्रायः विशालकाय होटलों जितनी आवश्यक प्रक्रियाओं से नहीं गुजरना पड़ता है। पूर्व नियोजित आरक्षण के साथ यदि भोजन व अन्य व्यवस्थाओं की पूर्व जानकारी होने से ऐसी सुविधाएं जुटाना संभव हो पाता है अन्यथा स्थानीय व्यवस्था से ही सन्तोष करना पड़ता है।

(3) ये स्थल चिन्तन, मनन, सृजन के लिए आदर्श साबित होते हैं क्योंकि इनमें आत्म केंद्रित होने वाले पर्यटक ही ठहरते हैं। यहां आकर सभी प्रकार के व्यवधानों से मुक्ति मिलती है और पर्यटक अपने समय को अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकते हैं।

(4) यहां पर्यटकों को अपने कक्ष के बाहर का वातावरण प्रदूषण रहित व मनोरंजक लगता है। अपने आराम के क्षण बाहरी परिवेश में बिताने के लिए क्षेत्र के भीतर विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से ऐसे स्थलों का स्वरूप निखरता है और वहां हमेशा पर्यटक आना पसन्द करते हैं।

(5) पर्यटक अपनी कुछ खास आदतें विकसित कर लेते हैं जिसके अन्तर्गत फार्म ट्यूरिज्म स्थल उनकी रुचि के अनुरूप खरे उतरने पर प्रायः समय समय पर आते रहते है और अपने परिवेश के लोगों को भी इन स्थलों पर जाने की सलाह देते हैं। इससे इन स्थलों की प्रसिद्धि बढ़ती जाती है।

(6) पर्यटक अपने चिन्ताओं व परेशानियों से मुक्त होने के लिए ही ऐसे स्थलों को उपयुक्त मानता है और यदि ऐसे स्थल उसकी परिस्थितियों व स्वभाव को भाते हैं तो वह अपने चयन को सार्थक मानता है।

(7) बहुत से ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व या महत्वपूर्ण व्यक्ति ऐसे स्थलों पर रुकना पसन्द करते है जिससे उनका यहां आना सार्थक होता है और जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहां आते है वह पूरा करने से उन्हें आत्मसंतुष्टि मिलती है। इन स्थलों का प्रचार प्रसार कम होने से ऐसे व्यक्तियों की यात्राएं गोपनीय रहती है और वे अपने को बाहरी संपर्क से मुक्त पाते हैं।

(8) ऐसे स्थलों पर प्रायः व्यावसायिक बैठकों, गंभीर विचार विमर्श, व्यवसाय या राजनीतिक व्यूहरचना के सृजन के लिए शान्त वातावरण मिलता है व्यक्ति अपने को बाहरी सर्म्पक से दूर भी रख सकता है जिससे उसके मनोरंजन व कार्य में आने वाले व्यवधानों से मुक्ति मिलती है।

उपरोक्त स्थितियों के परिपेक्ष्य में एक आदर्श फार्म हाउस पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि यहां आने वाले पूर्व नियोजित व आकस्मिक यात्रियों के लिए वे सभी सुविधाएं विकसित की जावें जिनकी पर्यटक अपेक्षा करते है। भ्रमण के लिए आने वाले पर्यटक अपनी सुविधाओं व सेवाओं के लिए यथोचित धन देते है और पूर्ण परिवेश अपने रुचि का पसन्द करते हैं इस दृष्टि से फार्म हाउस का प्रबंधन विशेष महत्व रखता है। मरुप्रदेश में अभी यह संस्कृति शैशवावस्था में ही है इसलिए इस दृष्टि से विचार किया जाना भी आवश्यक है।

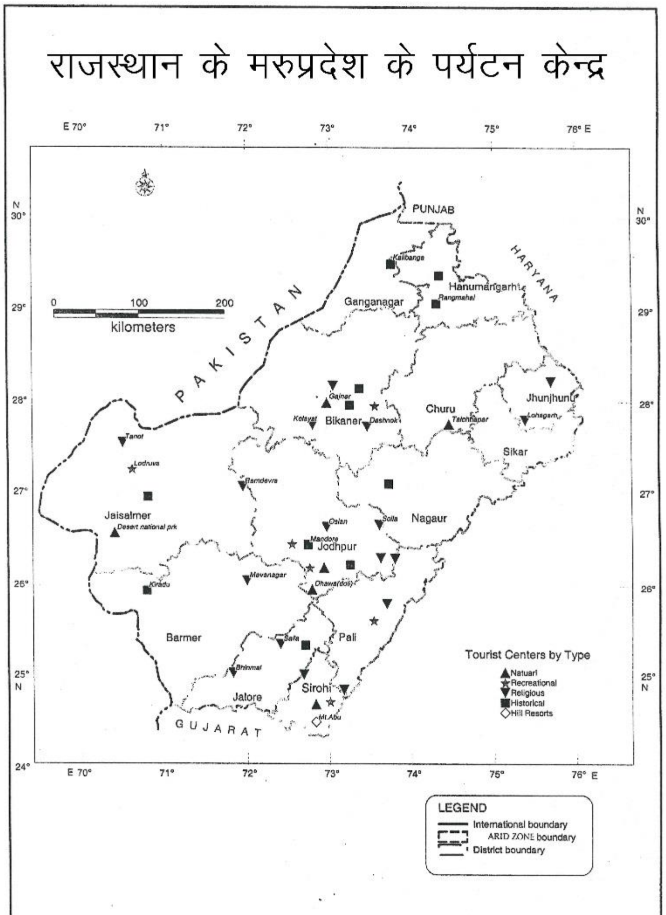

Source: Tourist Department, Rajasthan

मानचित्र

2 पर्यटकों की दृष्टि से फार्म हाउस प्रबंधन :

फार्म हाउस का पर्यटकों के लिए विश्राम स्थल का प्रबंधन एक महत्वपूर्ण विषय है जो पर्यटकों की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। विश्राम स्थल के कक्ष समस्त आवश्यक सुविधाओं यथा खिड़कियां, पर्दे, एयर कण्डीशनर, आरामदायक पलंग, टेबल कुर्सी, टायलेट, बाथरूम भव्य और साफ सुथरे होने चाहिए। इस स्थान पर पर्यटक अपने आराम के क्षण बिताना चाहता है इसलिए उसके लिए समस्त सुविधाएं मुहैया कराना आवश्यक है। कमरे में टेलीविजन, वीडियो टेलीफोन आदि सुविधाएं होनी भी आवश्यक है। ये समस्त आवश्यक अर्हताएं है। पर्यटक के आते ही उसके लिए आवश्यक प्रबंध तुरन्त किए जाने आवश्यक है। पानी की सुनिश्चितता तथा आवश्यकतानुसार गर्म, ठण्डे पानी की व्यवस्था होना भी आवश्यक है। आवश्यक अल्पाहार व पेय पदार्थ मांग के अनुसार शीघ्र उपलब्ध कराया जाना पर्यटक को अच्छा लगता है और वह महसूस करता है कि प्रबंधन उसकी सभी सुविधाओं व सेवाओं के लिए तत्पर है। भोजन की व्यवस्था आगन्तुक की रुचि के अनुरूप होने से उसे आत्मिक संतुष्टि मिलती है।

पर्यटक विश्राम स्थल प्रबंधन से अपने आगामी कार्यक्रम की पुष्टि भी चाहता है या आवश्यक परिवर्तन उसकी अपेक्षानुसार मांग करता है। इस स्थल पर पंहुचकर पर्यटक अपने आगामी कार्यक्रमों में परिवर्तन भी कर सकता है जिसके लिए फार्य हाउस प्रबंधन से सभी आवश्यक व्यवस्थाओं की अपेक्षा करता हैं इस दृष्टि से प्रबंध व्यवस्था सुचारु होनी चाहिए और सभी ओर पूरा नेटवर्क जुड़ा होना आवश्यक है। आसपास बड़े

शहरों में स्थित नेटवर्क से सभी व्यवस्थाएं आसानी से हो जाती है और पर्यटक इससे काफी राहत महसूस करता है। पर्यटक स्थल पर आवश्यक चिकित्सा सेवा नेटवर्क भी आवश्यक है और प्राथमिक चिकित्सा सुविधा स्थानीय स्तर पर होनी आवश्यक है। स्टाफ में से ही किसी व्यक्ति को यह जानकारी होने से अनावश्यक व्यय रोका जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर डॉक्टर सेवा या अस्पताल ले जाने की सुविधा भी फार्म हाउस में होनी आवश्यक है।

फार्म हाउस का बाहरी परिसर पूर्णतया सुव्यवस्थित होना आवश्यक है यहां कुछ खेल सुविधाओं से छोटे बच्चों का बाहरी स्थल खेलकूद के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। बाहरी परिसर में हरियाली होने से यह क्षेत्र आकर्षक बन जाता है अतः अच्छी लॉन व फूलवाले पौधों की उपस्थिति उसे आकर्षक बनाती है।

फार्म हाउस का बाहरी प्रबंधन

फार्म हाउस का पूरा परिसर फलदार पेड़ों व शाक सब्जियां उगाकर इस्तेमाल किया जाना चाहिए। पूरा परिसर हरा भरा व बनस्पति युक्त होने से पर्यटक यहां कुछ समय बाहरी परिवेश में बिताकर अपने को ताजगी दे सकता है। अच्छे किस्म के पेड़ों व पौधों की जानकारी स्थानीय स्टाफ को होनी चाहिए जिससे वे पर्यटक की पारिस्थितिकी व पेड़ पौधों की जानकारी सुलभ करा सके। बहुत से पर्यटक वैकल्पिम व्यवस्था के सुझाव भी देते है जिन्हें वे ध्यानपूर्वक सुनने व अपनाए जाने की अपेक्षा रखते हैं। यह स्थल पर्यटकों के घूमने में भी उपयोग आ सकता है अतः पूरा परिसर साफ सुथरा होना आवश्यक होता है। प्रातकाल या सांयकाल में पर्यटक बाहरी परिसर में घूमना पसन्द करते है अतः यहां सफाई व ताजगी होनी नितान्त आवश्यक है।

सड़क के नजदीक बने परिसर में बाहरी क्षेत्र में बड़े वृक्ष होना अत्यन्त आवश्यक है जिससे वे सड़क के प्रदूषण को समाप्त कर भीतरी क्षेत्र को प्रदूषण मुक्त रख सकें। बड़े व छायादार पेड़ होने से सड़क की प्रदूषित ध्वनियां व धुंआ अन्दर नहीं आता है। फार्म हाउस मुख्य भवन यदि कुछ दूरी पर स्थित हो तो इन समस्याओं से बचा जा सकता है। आदर्श फार्म हाउस लगभग 20 हेक्टेयर का माना जा सकता है जहां बाहरी व भीतरी सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में जुटाई जा सकती हैं।

3 फार्म हाउस का जल प्रबंधन

फार्म हाउस में पर्यटक स्थल का बेकार जल संग्रहीत कर पेड़ों में काम लिया जा सकता है जिसके लिए आवश्यकतानुसार ड्रिप या स्प्रिंकलर प्रणाली उपयोग में लाई जा सकती है। ऐसे प्रयासों से जल का इस्तेमाल भीतरी साजसज्जा व हरियाली बनाएं रखने के साथ साथ अच्छे जल प्रबंधन की मिसाल भी कायम करता हैं। फार्म हाउस में रखे गए दुधारु मवेशी भीतरी दूरवर्तीी क्षेत्र में रहने चाहिए और इनके गोबर से वर्मी कम्पोस्ट जैसी व्यवस्था करके बेहतर प्रबंधन दर्शाया जा सकता है और परिसर में उपयोग भी किया जा सकता है। इनसे तैयार वस्तुएं शुद्ध व स्वादिष्ट होती है।

इन सभी व्यवस्था को करने का उद्देश्य एक आदर्श फार्म हाउस का नमूना पेश किया जाना है जहां पर्यटक शान्त व स्फूर्तिदायक वातावरण पाता है जो इसके मूल उद्देश्य का ही भाग है। प्राकृतिक वातावरण का निर्माण करके ही ऐसे फार्म हाउस सफलता पूर्वक चलाए जा सकते हैं।

4 फार्म हाउस की सुरक्षा व्यवस्था

बाहर से अपने वाला पर्यटक ऐसे स्थलों पर पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था भी चाहता है। यह बात विशिष्ट व्यक्तियों और अपनी यात्रा को गोपनीय रखने वाले व्यक्तियों के मामले में बहुत ही संवेदनशील होती है। फार्म हाउस का स्वरूप एक मिनी होटल जैसा माना जा सकता है और सम्बन्धित राज्य व जिला प्रशासन इन स्थलों पर होने वाली घटनाओं की तुरन्त जानकारी की भी अपेक्षा रखता हैं विदेशी पर्यटकों के प्रवास व भ्रमण की सूचना स्थानीय प्रशासन को समय पर व यथेष्ठ रूप में कराई जानी आवश्यक हैं इस प्रकार बहुत से संवेदनशील मुद्दे फार्म हाउस संस्कृति से जुड़े है जिनकी पालना करना अत्यन्त आवश्यक है।

पर्यटकों के वेश में कुछ ऐसे व्यक्ति भी फार्म हाउसों में शरण लेते हैं जो पुलिस व प्रशासन की पहुंच से बचना चाहते हैं। ऐसे व्यक्तियों की उपस्थिति व उनकी जानकारी स्थानीय प्रशासन तक पहुंचनी बहुत जरूरी है। इसी क्रम में अति महत्वपूण्र या विशिष्ट व्यक्ति की गोपनीय यात्रा से आसपास की हलचलें बड़ी खतरनाक साबित होती है अतः इन सभी मुद्दों पर फार्म हाउस प्रबंधन को बहुत सूझ बूझ से काम लेना आवश्यक है। विदेशी पर्यटक चाहे वे किसी भी देश के हों, उनकी सुरक्षा स्थानीय लोगों की तुलना में अधिक जागरुकता से की जानी आवश्यक है परन्तु कुछ विशेष देशों के साधारण पर्यटक, राजनयिक व महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा बहुत जटिल कार्य हैं क्योंकि स्थानीय विरोध उनके प्रति प्रबल होता है।

फार्म हाउस प्रबंधन बहुत जटिल कार्य है और यह उतना सरल नहीं जैसा कि लोग अनुमान लगा लेते हैं। इसमें उन सभी आवश्यक अर्हताओं का पालन करना अनिवार्य है जो एक होटल के लिए आवश्यक है। इन स्थलों की अवस्थिति शहर से दूर शान्त वातावरण के बहुत से लाभ के साथ सतर्कता बरतना भी आवश्यक है। अधिकांश पर्यटक शहरों की भीड़भाड़ से दूर रहकर अपना प्रवास करते हैं वहीं कुछ व्यक्ति प्रशासन की निगाह से बचने के लिए ऐसे स्थलों को आदर्श मानते हैं व पूर्णतया सुरक्षित महसूस करते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति इन फार्म हाउसों की छवि को बिगाड़ सकते हैं। जहां फार्म हाउस प्रबंधन अपनी सुविधाओं के उपयोग के लिए इन्हें शरण देता है परन्तु प्रशासन की बाद में जानकारी मिलने पर प्रशासन इनका अस्तित्व ही खतरे में डाल सकता है।

रात्रि में फार्म हाउसों की स्थिति काफी असुरक्षित रहती है इसके लिए पूरी चौकसी रखकर ही इसे कारगर बनाए रखा जा सकता है। फार्महाउस अपनी ख्याति व कुशल प्रबंधन के आधार पर ही पनपते हैं और इसमें कहीं भी कमी आने या दुर्घटना होने से इनकी साख बिगड़ जाती है। मरु क्षेत्र सामान्यतया शान्त क्षेत्र है और यहां कानून व्यवस्था की स्थिति अन्य स्थानों की तुलना में बहुत अच्छी है परन्तु फिर भी यदाकदा कोई घटना घट जाने में ऐसे स्थल बदनाम हो जाते हैं। देशी व विदेशी पर्यटकों के रूप में आने वाले व्यक्तियों के प्रति फार्म हाउस प्रशासन का व्यवहार बहुत ही विनम्र व सादगीपूर्ण होना चाहिए। इन लोगों की विश्वसनीयता भी प्रबंधन तो पूरी रखी चाहिए। कई बार प्रशासन को कुछ संवेदन शील जानकारी मिलने पर इन स्थलों की गहन जांच होती है। प्रायः ऐसा तब होता है जब फार्म हाउस प्रबंधन स्थानीय प्रशासन को समय पर पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं कराता। यदि ऐसी आकस्मिक जांच होने पर सत्यता पाइ जाती है तो भी फार्म हाउस की साख गिरती है अतः फार्म हाउस प्रबंधन को सभी आवश्यक दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए।

मरुप्रदेश में फार्म हाउस संस्कृति अभी अधिक विकसित नहीं हुई है। यह एक नवीन क्षेत्र है जिसमें विकास व वृद्धि की असीम संभावनाए हैं तथा पर्यटन विकास में भी कारगर सिद्ध हो सकती है। अतः फार्म हाउसों का निर्माण काफी उपयुक्त स्थल पर होना चाहिए जहां पर्यटक रुके और उन्हें ऐसा स्थल पसन्द आवे। यह पर्यटन विधा का नवीन स्वरूप है इसलिए इसे सावधानी पूर्वक व कुशलता से विकसित करना चाहिए।

5 मरु प्रदेश में खेत पर्यटन

खेत पर्यटन एक विशेष प्रकार की पर्यटन विधा है जिसमें पर्यटक स्थानीय कृषि व्यवस्था, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, सामाजिक आर्थिक परिवेश, संस्कृति, विरासत आदि का अध्ययन करने की दृष्टि से स्थान विशेष पर आते हैं और वहां काफी लम्बी अवधि के लिए रुककर अध्ययन करते हैं खेत पर्यटन के लिए कुछ देशी–विदेशी पर्यटक सूक्ष्म अवधि के लिए भी आते है और स्थानीय अवस्थिति का अवलोकन करते हैं। इस पर्यटन को पेईंग गेस्ट प्रणाली के समकक्ष ही माना जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में पर्यटकों को ठहरने के लिए होटल व फार्म हाउस नहीं होते अतः प्रायः यहां आने वाले पर्यटक किसी व्यक्ति के घर पर ही ठहरते हैं या उनकी व्यवस्था किसी सामुदायिक केन्द्र होने पर वहां की जा सकती है। खेत पर्यटन ग्रामीण पर्यटन का एक स्वरूप है जिसमें पर्यटक किसी विशेष गांव के परिवेश का समग्र या विशिष्ट विषयों पर आधारित रखते हुए चयन करता है। खेत पर्यटन प्रायः किसी अध्ययन का भाग होता है जिसमें आने वाले व्यक्तियों को अपने अध्ययन क्षेत्र से जुड़े विषयों की जानकारी यहां रहकर करनी होती है।

खेत पर्यटन के लिए विविध श्रेणी के पर्यटक होते हैं जो अति सूक्ष्म अवधि से लम्बी अवधि तक के लिए आते हैं। समय का निर्धारण पर्यटक के निहित उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर किया जाता है। एक सामान्य पर्यटक जो मरुप्रदेश की कृषि प्रणाली के संबंध में अत्यन्त सामान्य या मौलिक जानकारी चाहता है वह थोड़ी अवधि के लिए रुककर, खेतों में ठहरकर, स्थानीय लोगों से चर्चा करके वापस चला जाता है। खेत पर्यटक यदि किसी ग्राम विशेष की कृषि व्यवस्था से संबंधित विस्तृत अध्ययन का भाग है तो इसके लिए कई दिनों तक भी रुकना होता है। इस प्रकार खेत पर्यटन के लिए आने वाले व्यक्तियों को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है

(1) ग्रामीण क्षेत्र में कृषि की सामान्य जानकारी के लिए आने वाले पर्यटक

(2) खेती के विशिष्ट पहलुओं के अध्ययन के लिए आने वाले शोधकर्ता पर्यटक जो किसी विशेष अध्ययन के भाग के रूप में अध्ययन के लिए आते हैं।

(3) खेती पर विभिन्न पर्यावरणीय व परिस्थितिकी दृष्टिकोणों से अध्ययन करने वाले भूगोलविद्

(4) खेती सहित ग्रामीण परिवेश का समग्र अध्ययन करने वाले पर्यटक।

सामान्यतया खेत पर्यटन का उद्देश्य कृषि व उससे संबंधित विषयों से होता है अतः मरु प्रदेश में खेत पर्यटक को स्थान विशेष का चुनाव करने के लिए कुछ मौलिक जानकारी होने पर ही वह किसी उपयुक्त स्थल का चयन करता है। ऐसे विषयों में कुल भोगोलिक क्षेत्रफल के साथ साथ कृषि योग्य भूति व सिंचित सुविधा युक्त भूमि की जानकारी होना आवश्यक है। यह सूचना सारिणी सं. 4 में दर्शाई गई है।

सारिणी सं 4

कृषि योग्य भूमि व सिंचित सुविधायुक्त भूमि

क्र.सं.	जिला	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (राजस्व रिकार्ड के अनुसार)	बोया गया क्षेत्र	प्रतिशत	सिंचित क्षेत्र स्त्रोत सहित					बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत
					नहर	टांके	कुएध ट्यूब वेल	अन्य	कुल	
1.	बाड़मेर	2817332	1649224	58.54	–	–	96055	151	96206	5.83
2.	बीकानेर	3035946	1477979	48.68	123770	–	37079	–	160849	10.88
3.	चुरु	1385898	1151220	83.07	–	–	43739	–	43739	3.80
4.	गंगानगर	1093352	698293	63.87	523146	–	933	–	524079	75.05
5.	हनुमानगढ़	970315	778027	80.18	311447	–	4024	2	315473	40.55
6.	जैसलमेर	3839154	485475	12.64	41407	–	12035	1	53443	11.01
7.	जालौर	1056602	648625	61.39	5510	–	207475	–	212985	32.84
8.	झुंझनू	591683	433249	73.22	24	–	198918	–	198942	45.92
9.	जोधपुर	2256405	1265944	56.10	–	–	133678	–	133678	10.56
10.	नागौर	1764383	1237480	70.14	–	1139	232988	173	234300	18.33
11.	पाली	1233079	576225	46.73	–	34608	112564	43	147215	25.55
12.	सीकर	774244	518399	66.95	–	–	212512	–	212512	40.99
	योग	20818393	10920080	52.45	1005304	35747	1292000	370	2333421	21.37

स्त्रोत – स्टेटिस्टिकल एब्सट्रेक्ट, राजस्थान – 2002

उपरोक्त सारिणी की सूचना से स्पष्ट है कि मरु क्षेत्र में जिलों के भौगोलिक आकार में बहुत विविधता है। जैसलमेर जिला कुल भौगोलिक क्षेत्र के 18.44 प्रतिशत क्षेत्र में फैला हुआ है वहीं झुंझुनू जिले का भौगोलिक क्षेत्र मात्र 2.84 प्रतिशत है। भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से बाड़मेर, बीकानेर व जोधपुर क्रमशः 13.53, 14.58 व 10.84 प्रतिशत भू भाग को घेरे हुए हैं। वहीं अन्य छोटे जिलों का आकार सीकर, हनुमानगढ़, गंगानगर, जालौर व पाली में मात्र 3.72, 4.66, 5.25, 5.07 व 5.92 प्रतिशत क्रमवार है। मरुक्षेत्र के कृषि योग्य क्षेत्र की बुवाई का आधार पर विश्लेषण यह दर्शाता है कि मरुप्रदेश का सबसे बड़ा जिला जैसलमेर का 12.64 प्रतिशत बुवाई के अन्तर्गत है वहीं सबसे अधिक बुवाई वाला क्षेत्र 83.07 प्रतिशत चुरु जिले में है। अधिक बुवाई क्षेत्र वाले अन्य जिले हनुमानगढ़, झुंझुनू, नागौर, सीकर, गंगानगर व जालौर है जहां कुल जिले के भौगोलिक क्षेत्र के

क्रमशः 80.18, 73.22, 70.14, 66.95, 63.87 व 61.39 प्रतिशत भाग में खेती होती है। पाली व बीकानेर में क्रमशः 46.73 व 48.68 प्रतिशत क्षेत्र में कृषि की जाती है।

मरुक्षेत्र के बोए गए क्षेत्रफल में से सिंचाई सुविधा युक्त क्षेत्र में अत्यन्त असमानता है जो इस तथ्य से परिलक्षित होती है कि चुरु, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर में क्रमशः 3.80, 5.83, 10.56, 10.88 व 11.01 प्रतिशत क्षेत्र में ही सिंचाई संभव है। इसके विपरीत गंगानगर का 75.05 कृषि क्षेत्र सिंचित है इसके अतिरिक्त झुंझनू, सीकर व हनुमानगढ़ में क्रमशः 45.92, 40.99 व 40.55 प्रतिशत कृषि क्षेत्र सिचाई सुविधा युक्त है। इन विविधताओं के परिपेक्ष्य में खेत पर्यटन के इच्छुक व्यक्ति उपरोक्त जानकारी को दृष्टिगत रखकर अपने उद्देश्य के अनुसार स्थान का चयन करते हैं।

स्त्रोतवार सिंचाई सुविधा की दृष्टि से नहरी सिंचाई वाले जिलों में गंगानगर जिला शीर्ष पर है जहां मरु क्षेत्र के नहरी सिंचाई सुविधा की 52.04 प्रतिशत भूमि आती है। इसके पश्चात् क्रमशः हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, जालौर व झुंझनू जिले का स्थान है। टैंक सिंचाई सुविधा मात्र पाली व नागौर जिलों में ही संभव है। मरु प्रदेश के समस्त जिलों में कुए व ट्यूबवैल से सिंचाई की जाती है इसमें सबसे अधिक सिंचित क्षेत्र क्रमशः नागौर, सीकर, जालौर, झुंझुनू, जोधपुर व पाली का स्थान है। मरुस्थल क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत वाटरशेड विकास पर बहुत बड़ी धनराशि व्यय की गई परन्तु यह निरर्थक ही साबित हुई क्योंकि केवल पांच जिलों में मात्र 370 हेक्टेयर पर भूमि में सिंचाई सुविधा सृजित की जा सकी।

खेत पर्यटन की दृष्टि से आने वाले पर्यटकों का उद्देश्य नहरी सिंचाई से पर्यावरण व परिस्थितिकी पर पड़नेवाले प्रभाव का प्रमुख स्थान है। मरु प्रदेश में नहरी प्रणाली गत शताब्दी के उत्तरार्ध में ही संभव हो पाई है। आजादी के पूर्व गंगानगर जिले की कुछ मात्रा में गंगनहर द्वारा ही सिंचाई के लिए नहरे बनी थी। स्वतंत्र भारत में मरुप्रदेश का नहरीकरण मुख्यतया इन्दिरागांधी नहर प्रणाली से ही हुआ जिससे गंगानगर, हनुमानगढ़ बीकानेर व जैसलमेर जिलों के क्षेत्र ही लाभान्वित हुए। नहरें सिंचाई का अच्छा परिणाम उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि से हुआ और नहरी सिंचाइ में आए क्षेत्र खुशहाल हो गए, वहीं बड़े पैमाने पर बाहर लागिंग या जल प्लावन से कृषि भूमि का बहुत नुकसान हुआ जो नहरी प्रणाली का बड़ा दोष है। इससे होने वाले पर्यावरण व पारिस्थितिकी प्रभाव अध्ययन के व्यापक विषय है।

6 कृषि जोत

खेत पर्यटन का एक दृष्टिकोण उत्पादन व उत्पादकता भी है। जो एक विश्लेषण परक विषय है। इसके अन्तर्गत विभिन्न सिंचाई साधनों व शुष्क खेती प्रणाली वाले क्षेत्रों की उत्पादन व उत्पादकता विशिष्ट अध्ययन परक विषय है जो विषय विशेषज्ञ पर्यटकों के द्वारा ही संभव है। इस क्षेत्र में भूमि विस्तार के कारण किसानों के द्वारा अधिकृत कृषि क्षेत्र भी अधिक है। इसको कृषि भाषा में क्रियाशील जोत कहते हैं जो राजस्थान के औसत क्षेत्र की तुलना में काफी अधिक है। सरलभाषा में एक काश्तकार के अधीन क्षेत्र के जोत कहा जाता है और जिस भूमि पर खेती होती है उसे क्रियाशील जोत कहते हैं। यह तथ्य सारिणी संख्या 5 में दर्शाया गया है। (मानचित्र 40)

सारिणी सं. 5
मरुक्षेत्र में काश्तकारों की संख्या व क्रियाशील जोत 1995—96
(जोत हेक्टेयर में)

क्र.सं	जिला	सीमान्त कृषक		लघु कृषक		अन्य कृषक		योग		औसत जोत
		संख्या	जोत	संख्या	जोत	संख्या	जोत	संख्या	जोत	
1.	बाड़मेर	7126	3421	9949	15268	165724	2255057	182799	2273746	12.44
2.	बीकानेर	1903	1148	4623	6921	139372	1572673	145898	1580742	10.83
3.	चुरु	2469	1511	7841	12183	151619	1534514	161929	1548208	9.56
4.	गंगानगर	2599	1554	8466	12597	109044	865590	120109	879741	7.32
5.	हनुमानगढ़	9990	5887	18917	27777	117027	844729	145934	878393	6.02
6.	जैसलमेर	2938	2114	3617	5371	44713	663936	51268	671421	13.10
7.	जालौर	11270	6332	20294	30806	101843	767789	133407	804927	6.03
8.	झुंझनू	32746	19758	47283	68852	85674	374952	165703	463562	2.80
9.	जोधपुर	15209	8458	22343	33815	169725	1766336	207277	1808609	8.73
10.	नागौर	25845	12184	34906	52667	190624	1433929	251375	1498780	5.96
11.	पाली	56475	30374	47136	68767	101430	706478	205041	805619	3.93
12.	सीकर	40687	23283	50037	72402	107567	515595	198291	611280	3.08
	योग	209257	116024	275412	407426	1484362	13301578	1969031	13825028	7.02

स्त्रोत — स्टेटिस्टिकल एब्सट्रेक्ट राजस्थान 2002

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से जो तथ्य उजागर होते हैं उनके अनुसार राजस्थान राज्य की औसत कृषि जोत 3.96 हेक्टेयर प्रति काश्तकार है। इस तुलना में मरुप्रदेश के जिलों का विश्लेषण करने पर यह प्रकट होता है जैसलमेर, बाड़मेर व बीकानेर जिलों में प्रतिकाश्तकार औसत कृषि जोत क्रमशः 13.10, 12.44 व 10.83 हेक्टेयर है। साथ ही तीन जिलों झुंझनू, सीकर व पाली में प्रतिकाश्तकार औसत जोत राज्य औसत से कम है जो क्रमशः 2.80, 3.08 व 3.93 हेक्टेयर है। इसी क्रम में जो अन्य तथ्य सामने आते हैं वे निम्न प्रकार हैं:—

(1) सीमान्त कृषक उन किसानों को वर्गीकृत किया जाता है जिनके पास एक हेक्टेयर से कम भूमि है ऐसे किसानों की संख्या मरुप्रदेश में कुल काश्तकारों की 10.63 प्रतिशत है जिनके पास 0.84 प्रतिशत कृषि भूमि है।

(2) लघु कृषक की श्रेणी में वे काश्तकार आते हैं जिनके पास एक हेक्टेयर से अधिक व 2 हेक्टेयर तक कृषि भूमि है। लघु कृषक श्रेणी के काश्तकार कुल कृषकों का 13.99 प्रतिशत है जिनके पास कुल कृषि भूमि की मात्रा 2.95 प्रतिशत भूमि है।

(3) अर्ध मध्यम काश्तकार 2 से 4 हेक्टेयर की भूमि वाले किसान कहलाते हैं मध्यम काश्तकार 4 से 10 हेक्टेयर कृषि जोत वाले काश्तकार होते हैं तथा बड़े काश्तकार 10 हेक्टेयर से अधिक कृषि जोत वाले काश्तकार होते हैं। इन सभी श्रेणियों के काश्तकार कुल कृषकों के 75.38 प्रतिशत है जिनके पास कृषि भूमि 96.21 प्रतिशत है। कृषि भूमि के असमान वितरण का परिणाम सामाजिक आर्थिक स्थिति पर भी पड़ता है सीमान्त व लघु कृषक प्रायः गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले काश्तकार होते हैं।

(4) सीमान्त व लघुकृषकों की भूमि सामान्यतया गैर सिंचित होती है जो प्रायः नहरी क्षेत्रों में अपवाद होता है। अन्य क्षेत्रों में जहां कुए व ट्यूबवैल से खेती की जाती है। इन छोटे कृषकों की हैसियत इतनी नहीं होती कि वे सिंचाई की सुविधा जुटा सकें। इसका प्रभाव इनके आर्थिक स्तर पर भी पड़ता है।

7 कृषि उत्पादन व उत्पादकता

कृषि क्षेत्र में खेत पर्यटन के महत्व का दूसरा पक्ष कृषि उत्पादन व उत्पादकता है। इसके द्वारा यह अध्ययन किया जाता है कि मरुक्षेत्र में कृषि प्रणाली किस प्रकार की है। कृषि उपज की दृष्टि से बाजरे का उत्पादन मरुक्षेत्र में व्यापक रूप से किया जाता है वषा कम होने के कारण इस क्षेत्र में बाजरे की खेती बहुतायत से की जाती है और राजस्थान के 80 प्रतिशत से अधिक बाजरे की बुवाई इस क्षेत्र में होती है। जिसमें से बाड़मेर में बाजरा क्षेत्र 18.67 प्रतिशत है। इसी प्रकार सबसे अधिक ज्वार की बुवाई पाली में की जाती है जहां राजस्थान का 16.70 क्षेत्र इस जिले में है। सबसे अधिक गेंहू की बुवाई गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में की जाती है जो पूरे राजस्थान का 18.25 प्रतिशत है। चावल की खेती के कुल क्षेत्र में से 22.06 प्रतिशत खेती गंगानगर व हनुमानगढ़ में होती है। दालों के उत्पादन में भी मरुक्षेत्र का विशेष योगदान है। चने की खेती का 60.76 प्रतिशत मरुक्षेत्र में स्थित है। दालों के उत्पादन में भी मरुक्षेत्र का विशेष योगदान है यहां राजस्थान के 75.81 प्रतिशत भाग में दलहन की खेती की जाती है। उलसी की खेती का 63.14 प्रतिशत मरुक्षेत्र में होता हैं मरुक्षेत्र में सरसों का उत्पादन भी किया जाता है जो राजस्थान के 35.06 प्रतिशत भाग में बोई जाती है। अरण्डी की बुवाई राजस्थान की 60.72 प्रतिशत मरुप्रदेश में की जाती है।

मिर्च व कपास का उत्पादन भी मरुक्षेत्र में बहुतायत से होता है। इस प्रकार विभिन्न भौगोलिक व प्राकृतिक बाधाओं के उपरान्त भी यहां प्रायः हर प्रकार की फसल बोई जाती है तथा उत्पादकता भी औसतन अच्छी है। प्रमुख फसलों की अन्तर्गत, उत्पादकता का विवरण सारिणी संख्या 6.6 में करते हुए राजस्थान की औसत उत्पादकता से तुलना भी की गई है जिससे इस क्षेत्र के कृषि उत्पादन की क्षमता का आकलन संभव हो सके।

सारिणी 6.6
मरुप्रदेश के प्रमुख फसलों की उत्पादकता 2001–02
(प्रति हेक्टेयर कि.ग्रा. में)

क्र.स.	जिला	बाजरा	जुवार	गेंहू	चावल	चना	अन्य खरीफ दालें	अलसी	सरसों	मूंगफली	अरण्डी
1.	बाड़मेर	260	413	2793	—	758	279	372	1084	1200	899
2.	बीकानेर	391	414	1752	—	604	174	379	705	1132	500
3.	चुरु	727	400	2793	—	199	373	327	1084	1611	—
4.	गंगानगर	745	410	2873	2246	590	204	327	1354	811	486
5.	हनुमानगढ़	775	412	3749	3048	382	396	595	1221	1226	736
6.	जैसलमेर	184	414	2793	—	758	262	327	819	1227	211
7.	जालौर	560	414	1299	—	758	234	257	889	1231	1267
8.	झुंझनू	1036	500	2490	—	1142	295	328	1113	1226	—
9.	जोधपुर	682	261	2716	—	758	240	388	1140	1227	789
10.	नागौर	830	260	2579	—	789	217	245	1098	917	663
11.	पाली	551	312	1665	—	845	221	317	884	1689	2598
12.	सीकर	1072	417	3281	—	1147	310	327	1144	1069	—
	योग	745	414	2793	—	758	271	327	1084	1226	1437

स्त्रोतः स्टेरिस्टिकल एब्स्ट्रेक्ट – राजस्थान–2002

मरुप्रदेश में कृषि की विभिन्न फसलों की उत्पादकता से यह निष्कर्ष निकलता है कि विषम भौगोलिक परिस्थितयों के उपरान्त भी मरुप्रदेश अधिक उत्पादकता के लिए प्रयत्नशील हैं इस दृष्टि से यह आश्चर्यजनक सत्य है कि बाड़मेर व जैसलमेर जिले अधिकांश फसलों में उत्पादकता राज्य के औसत के अनुरूप बनाए हुए हैं। इस सारिणी की सूचना से यह भी परिलक्षित होता है कि नहरी जिलों गंगानगर व हनुमानढ़ तथा कुओं व ट्यूबवैल से सिंचित सीकर व झुंझुनू जिले उत्पादकता के औसत में बराबर है या कुछ क्षेत्रों में आगे भी है और इन जिलों ने राज्य औसत से अधिक उत्पादकता अर्जित की है। पर्यटकों के लिए यह एक कौतूहल का विषय है क्योंकि विश्व के किसी भी मरुस्थलीय क्षेत्र में इस प्रकार की प्रगति नहीं हुई है। मरुप्रदेश के किसानों ने भौगोलिक व प्राकृतिक विषमताओं पर उल्लेखनीय रूप से विजय पाई है और परिस्थितियों को अपने परिश्रम से अनुकूल बनाया है। मरुप्रदेश के कृषि क्षेत्र के इन प्रयासों द्वारा जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के लिए अनाज उत्पादन को राज्य को खाद्यान आधिक्य प्रदेश बनाने में अपनी सापेक्ष भूमिका निभाई है। इस क्षेत्र में आने वाला पर्यटक यह निश्चित रूप से जानने पर कोतूहल रखता है कि मरूस्थलीय क्षेत्र में अनाज का उत्पादन एक अच्छी उपलब्धि के साथ कैसे संभव हो सका है।

8 खेत पर्यटन के रुचि रखने वाले सामान्य पर्यटक

मरु क्षेत्र के बारे में यह जग विख्यात है कि थार मरुस्थल में खेतीबाड़ी करके काश्तकार अच्छी पैदावार लेते हैं। इस दृष्टि से यहां आने वाले पर्यटक खेतीबाड़ी की प्रणाली, सिंचाई के साधन, वनस्पति, वन्य जीव आदि के साथ पर्यावरण के बारे में भी जानना चाहते हैं। मरुभूमि की एक विरासत और है जो यहां के सांस्कृतिक परिवेश से भी जुड़ी हुई है। ओरण वह मरुप्रदेश में हरियाली लाने की एक स्थानीय प्रक्रिया है। यह स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व उसे मूर्तरूप देने की प्रक्रिया हैं किसी गांव में अपने पितरों, इष्टदेवता को भूमि समर्पित करके उसे हरा भरा बनाने का प्रयास कर अपने दायित्वों से उरिण होने की परम्परा को कहते हैं। यहां के निवासी अपनी खेती की कुछ भूमि मृत आत्माओं या स्थानीय देवता को प्रदान कर उसे हरा भरा बनाते हैं। उस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति पेड़ नहीं काटता है। इस क्षेत्र में एक थान बनाकर देवता या पितर को स्थापित करते हैं। पशुपक्षियों के पीने के लिए पानी भरते है और किसी वन्य जीव का शिकार नहीं होने देते। यहां वर्षा के जल को एकत्रित कर पेड़ पौधों की सिंचाई करके उस क्षेत्र को हरा भरा रखने के पीछे अपने देवता या मृत आत्माओं को प्रसन्न करना मानते हैं।

इस स्थानीय परम्परा से जहां एक ओर हरियाली होती है वहीं इससे आकर्षित होकर वन्य जीव व पशुपक्षी आश्रय लेते हैं। यहां कोई भी व्यक्ति पेड़ नहीं काटता केवल इसमें से सूखी लकड़ियां एकत्रित करते हैं। स्थानीय लोग प्रायः अपनी प्रदत्त भूमि इस निमित्त रख देते है जिसमें खेती नहीं होती। इस प्रक्रिया को बायो डायवर्सिटी भी कहा जा सकता है। मरुक्षेत्र में ओरण के लिए छोड़े गए क्षेत्र व उनमें लगाए गए पेड़ व शरण लेने वाले पशुपक्षी का विवरण निम्न तालिका स. 7 में दर्शाया गया है

सारिणी सं. 7
मरुप्रदेश के ओरण

क्र.सं.	जिला	ओरणों की संख्या	ओरणों का क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	वनस्पति व वन्य जीव संरक्षण
1.	बाड़मेर	253	50,000	बेर, केर, खेजड़ी, कुमट, आक, हिरण, सियार, नीलगाय,
2.	बीकानेर	3	5,000	चिंकारा, बबूल, केर, खेजड़ी, हिरण, नीलगाय
3.	चुरु	—	—	—
4.	गंगानगर	—	—	—
5.	हनुमानगढ़	—	—	
6.	जैसलमेर	27	43,300	बेर, केर, जाल, खेजड़ी, हिरण, बिल्ली, लोमड़ी, गोडावण
7.	जालौर	22	100	कूमट, नीम, बेर, जूलीफ्लोरा, पीपल, रीछ, बघेरा, चिंकारा
8.	झुंझनू	1	1,000	नीम, बबूल, खेजड़ी, धोक, किरण, लोमड़ी, नीलगाय
9.	जोधपुर	21	314	बड़ पीपल, नीम, बबूल, कल्पवृक्ष, खेजड़ी
10.	नागौर	31	1,413	धोक, खेजड़ी, केर, बबूल, सालर, नीलगाय, लोमड़ी, भेड़िया
11.	पाली	57	916	अरोंज, कुमठ, बबूल, नीलगाय, खरगोश, भेड़िया, लोमड़ी
12.	सीकर	2	700	नीम, धोंक, बबूल, खेजड़ी, हिरन, लोमड़ी, नीलगाय

स्त्रोत : वन विभाग राजस्थान।

मरु प्रदेश की एक अन्य विशेषता सार्वजनिक कुण्ड निर्माण की है। इसके पीछे पेयजल, पेड़ पौधे संरक्षण व वन्यजीव व यात्रियों के लिए पानी की व्यवस्था करना है। इन कुण्डों में वर्षा जल संचित रहता है। प्रायः कुण्ड गोलाकार होते है और किसी ढलान में बनाए जाते है जहां टोले का पानी एकत्रित होता है। कुण्ड की क्षमता समीपवर्ती क्षेत्र से जल आवक के आधार पर निर्धारित किया जाता है कुण्ड का आधार भूमि के भीतर होता है जिसने पानी के साथ मिट्टी को रोकने के लिए स्थानीय तकनीक का इस्तेमाल होता है तथा पृथ्वीतल से ऊपर ढांचा बनाकर गुम्बद बनाया जाता है। जल गृहण स्त्रोत को ढकन लगाकर ढकने की प्रक्रिया भी कहीं कहीं देखी जाती है। इससे जल सुरक्षित रहता है। सड़क के किनारे या रास्ते में बने कुण्ड के पास पानी भरने के लिए रस्सी बाल्टी भी रहती है जिससे पर्यटक प्यास बुझा सके।

9 खेत पर्यटन में शोधकर्ता

देशी विदेशी पर्यटक मरु प्रदेश में शोधकर्ता के रुप में भी आते है और गांवों में रहकर भूमि, खेती, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, संस्कृति, कला, विरासत आदि विभिन्न पक्षों का अध्ययन करते हैं। ऐसे पर्यटक गांव में ही रुकते है और स्थानीय लोगों के मेहमान या पेइंग गेस्ट के रूप में रहते हैं। सांस्कृतिक आदान प्रदान के अन्तर्गत बहुत से देशों के पर्यटक मरुप्रदेश में आकर अपना अध्ययन पूरा करते हैं। ऐसे पर्यटक स्थानीय भाषा की जानकारी भी कर लेते है जिससे काम चलाउ व्यवस्था बन सके और ये स्थानीय व्यवस्थाओं के बारे में वांछित जानकारी भी एकत्रित कर सके। ऐसे पर्यटक खेतीबाड़ी की तकनीक, स्थानीय प्रणाली, सिंचाई के तरीके, शुष्क खेती और ओस से खेती आदि विशिष्ट विषयों की स्थानीय तकनीक का पूरा अध्ययन करते हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय संसाधनों के उपयोग की प्रक्रिया भी अध्ययन विषय होते हैं जिसको पूरी तरह समझने के लिए पर्यटक कुछ समय यहां रुककर पूरी प्रणाली का अध्ययन करते हैं।

10 खेत पर्यटन के विशेषज्ञ अध्ययन :

थार के मरुप्रदेश के विकास का पर्यावरण व पारिस्थितिकी पर प्रभाव का अध्ययन करने की दृष्टि से आने वाले पर्यटक वृहद् दृष्टिकोण से अध्ययन करते है जिसमें विकास कार्यो के अन्तर्गत, शुष्क खेती प्रणाली, नहरी खेती, भूमि की उर्वरा शक्ति, जल रिसाव, भूमिगत जल स्तर में घटत, रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों के उर्वरा शक्ति पर प्रभाव आदि जैसे विशेषज्ञ अध्ययन करते हैं। ऐसे अध्ययन प्रश्नावली व व्यक्तिगत संपर्क माध्यम से सूचना संग्रहण कर व खेतों का वास्तविक मूल्यांकन कर पूरे किए जाते हैं। ऐसे विशेषज्ञ प्रायः अधिक अवधि के लिए एक से अधिक जिलों व विभिन्न गांवों की बहु आयामी अध्ययन करके अपना कार्य पूर्ण करते हैं। ये पर्यटक गांव में ही पेंइग गेस्ट के रूप में रहते है और उनके साथ खेत पर जाकर विभिन्न दृष्टिकोणों से स्थानीय स्थितियों का बारीकी से अध्ययन करते हैं।

ग्रामीण पर्यटन के अन्तर्गत खेत पर्यटन बहुत सीमित है क्योंकि इस प्रकार के पर्यटकों को गांवों में ग्रामीणें की तरह से रहने की आदत डालनी पड़ती है जो उनके आचार विचार व आदतों से कम मेल खाती है और बहुत कम संख्या में ऐसे पर्यटक आते हैं। सांस्कृतिक आदान प्रदान के अन्तर्गत कुछ पर्यटक गांवों में आकर उसी के साथ रुकते है और स्थानीय प्रशासन उनकी सारी व्यवस्थाएं कराता है। यह क्षेत्र पर्यटन विधा का एक विशिष्ट आयाम है और इसकी वृद्धि की काफी संभावना है।

11 मरुप्रदेश में हट पर्यटन

हट पर्यटन ग्रामीण पर्यटन का एक विशेष स्वरूप है जिसमें उत्सवों व मेलों में आने वाले पर्यटकों को हट में ठहराया जाता है राजस्थान सरकार का पर्यटन विकास विभाग कई मेलों व उत्सवों का आयोजन करता है इसमें प्रमुख है–

1 नागौर मेला : यह रामदेव जी पशु मेले के नाम से विख्यात है यहां पशुओं की खरीद बिक्री की जाती है जो बहुत से वर्षों से लगातार जारी है। अब इस मेले को नया स्वरूप देकर फरवरी मास के दौरान ही आयोजित किया जाता है जिसमें बहुत बड़ी संख्या में पशु आते हैं। नागौरी नस्ल राजस्थान की प्रमुख नस्लों में से एक है। इस मेले को 4 दिवस के लिए आयोजित किया जाता है और विभिन्न सांस्कृतिक व मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें पर्यटक बहुत बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इस स्थान पर बहुत से टैण्ट पर्यटकों को ठहरने के लिए प्रतिवर्ष लगाए जाते है और पूर्व आरक्षण भी किया जाता है। इन हटस में सभी आधुनिक सुविधाएं जुटाई जाती है जिससे पर्यटकों को नवीनता का आभास होता है।

2 मरु उत्सव जैसलमेर : यह उत्सव नागौर उत्सव के तुरन्त बाद ही फरवरी माह में आयोजित किया जाता है जो तीन दिन तक चलता है। इसमें मरुक्षेत्र के टीलों में हट्स लगाए जाकर पर्यटकों को ठहराया जाता है तथा विभिन्न श्रेणी के हट्स बनाकर इनका आरक्षण भी किया जाता है। यहां विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो पर्यटकों का भरपूर मनोरंजन करते है और बड़ी संख्या में पर्यटक भाग लेते हैं। पर्यटकों के लिए ऊंटों पर सैर की भी व्यवस्था की जाती है जो काफी लोकप्रिय हुई है।

3 मारवाड़ उत्सव, जोधपुर : यह उत्सव अक्टूबर माह में दो दिन के लिए आयोजित किया जाता है जिसमें पर्यटको के मनोरंजन के लिए मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलो के कलाकार नृत्य, गायन, वाद्य, खेलकूद, ऊंटो की दौड़ आदि बहुत से मनोरंजक कार्यक्रम करते हैं। पर्यटकों के ठहरने के लिए बड़ी संख्या में भव्य हट्स लगाए जाते है और टीलों के बीच इसका आयोजन होता है। आरक्षण व्यवस्था के कारण देशी विदेशी पर्यटकों को रहने की सुनिश्चित व्यवस्था की जाती है तथा रेतीले टीलों के बीच रहना व रात्रि विश्राम एक रोचक अनुभव होता है। इनमें पर्यटकों की संख्या निरन्तर बढ़ जाती है और उसी अनुरूप सुविधाओं का भी विस्तार किया जाता है।

4 बीकानेर उत्सव : इसका आयोजन जनवरी माह में दो दिन के लिए किया जाता है जहां पर्यटकों को टीलो के मध्य हट्स बनाकर ठहराया जाता है और विभिन्न प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं यहां स्थानीय लोग अपनी परम्परागत वेशभूषा में आकर विविध कार्यक्रमों में देशी विदेशी पर्यटकों के साथ हिस्सा लेते हैं। इस कार्यक्रम में विविधता लाने के लिए ऊंट नृत्य, पगड़ी संवार, रस्सी खींच आदि ऐसे कार्यक्रम किए जाते है जिसमें पर्यटकों का भरपूर मनोरंजन होता है। मरु प्रदेश में हट्स में रहना पर्यटकों के लिए आकर्षक अनुभव है।

हट पर्यटन के माध्यम से मरुस्थल के प्राकृतिक स्वरूप में समय गुजारना पर्यटकों के लिए विशेष अनुभव है। चारो ओर रेत के टीलों के बीच अनेक हट्स बनाए जाते हैं। बालुई रेत बहुत साफ होती है और इसके बीच रहना प्राकृतिक अवस्था में विचरण करना है। हट संस्कृति एक अत्यन्त रोचक विधा है जिसमें पर्यटकों की सुविधा के लिए सारी व्यवस्थाएं की जाती है। इनमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन मध्य रात्रि तक चलता है और पर्यटक अपनी सारी चिन्ताओं व परेशानियों से मुक्त हो जाता है। हट पर्यटन के माध्यम से पर्यटन विभाग को अच्छी आय होती है और पर्यटकों को बढ़ाने में भी सहायक है।

प्रायः पर्यटक अपने प्रवास काल में नए अनुभवों से गुजरना चाहता है। होटलों के विलासितापूर्ण वातावरण से हटकर एक विशेष वातावरण से आता है जहां प्रत्येक वस्तु उसके आराम के लिए नए स्वरूप में प्रस्तुत की जाती है जो नवीनता लिए हुए होती है और पर्यटक इस वातावरण को अत्यन्त उत्साह व रुचिपूर्व ढंग से स्वीकार करता है। विभिन्न प्रकार के आयोजन सामान्य कार्यक्रमों से हटकर होते है जो रोचक होने के साथ साथ नवीनता से भरे होते हैं।

ग्रामीण परिवेश में आकर पर्यटक शान्ति व सुखमय अनुभव करता है। ग्रामीण पर्यटन की विभिन्न विधाएं एक से एक बढ़कर है और इसमें पर्यटकों को जो अनुभव होते हैं उनके द्वारा उसे अजीब सा अनुभव होता है। मरुप्रदेश की समस्त विशेषताएं ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से देखने व अनुभव करने को मिलती हैं। पर्यटक अपने परिवेश से हटकर नवीनता व स्फूर्ति के लिए प्रवास करता है जो मरुप्रदेश में आकर उसे भरपूर मिलता है और यहां हर दृश्य आकर्षक व विचित्र लगता है। पर्यटकों की रुचि के अनुसार विविध प्रकार के कार्यक्रमों में हर बार कुछ नवीनता लाई जाती है जिससे उन्हें रोचक अनुभव होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Acharya, R.	1980	Tourism and Cultural Heritage of India. Jaipur (RBSA Publications).
Adams, A.	1989	(reprint 1900). The Western Rajputana States. Jodhpur (Vintage Books).
Agarwal, A. and Narain S.	1994	"I Don't Need It but You can't Have it: Politics on the Commons". Pastoral Development Network Paper 36a. London: Overseas Development Institute.
Agoramoorthy, G. and Mohnot, S.M.	1986	Checklist of birds around Jodhpur: Tiger paper, 13(3): 4-8.
Alfred, J.R.B. and Agrawal, V.C.	1996	The Mammal Diversity of the Indian Desert. In Faunal Diversity in Thar Desert. Gaps in Research (Ed. by Ghosh, A.K., Q.H. Baqari and I. Prakash), Jodhpur, (Scientific Publishers).
Ali, S.	1975	On Some Birds of Indian Desert. In Environmental Analysis of the Thar Desert. (Ed. by R.K. Gupta and Prakash, I.). English Book Depot, Dehra Dun.
Anand, M.M.	1976	Tourism and Hotel Industry in India. Prentice-Hall of India, New Delhi
Anonymous	1988	Global Tourism Forecasts of the Year 2000 and Beyond: Executive Summary, Madrid, World Tourism Organisation.
Anonymous	1994	Resource Atlas of Rajasthan. Department of Science and Technology, Government of Rajasthan, Jaipur.
Anonymous	1997	Ninth FIve Year Plan: 1997-2000. Deptt. of Tourism, Govt. of India, New Delhi.

Ashworth, G.J. and Larkham, P.J.	1994	Building a New Heritage Tourism, Culture and Identity in the New Europe. London, (Toutledge).
Anand, M.M.	1977	Tourism and Hotel Industry in India, prentice Hall of India.
Basak, T.N.		International Tourism in Federal Republic of Germany, Geography Institute
Bhatia, A.K	1978	Tourism in India, History and Development, Sterling Publisher Pvt. Ltd., New Delhi.
Banerji, S.K (ed.)	1952	Bulletin of the National Institute of Sciences of India. Proceedings of Symposium on the Rajputana Desert. New Delh, National Institute of Sciences of India.
Bappenas	1991	Biodiversity Action Plan for Indonesia, National Development Planning Agency, BAPPENAS, Jakarta.
Batra K.L.	1990	Problems and Prospects of Tourism. Jaipur. (Printwell Publishers).
Berker, F.	1989	Common Property Resources: Ecology and Community Based Sustainable Resource Development, London: Belhaven Press.
Berker, F. Feeney, D., McCay, B.J. and Acheson, J.M.	1989	The benefitts of the commons. Nature.
Bhandari, M.M.	1990	Flora of the Indian Desert (2nd ed.). MPS Reros, Jodhpur.
Bhandari, M.M	1991	Evolution of Desert Vegetation in Thar (Eds. Dhir et.al.) Geol. Soc. India.
Bhandari, M.M.	1995	Biodiversity of the Indian Desert. In Taxonomy and Biodiversity (ed. by A.K. Pandey). Delhi (CBS Publishers).
Bhatia, A.K.	1978	Tourism in India. History and Development. New Delhi (Sterling Publishers Pvt. Ltd.).
Bhatia, A.K.	1982	Tourism Development Principles and Practices. (Sterling Publishers Pvt. Ltd.), New Delhi
Bilgrami, K.S.	1995	Concept and Conservation of Biodiversity, In CBC Publishers, Delhi.
Biswas, S. and Sanyal, D.P	1977	Fauna of Rajasthan, India, Part II: Reptilla, Rec. Zool. Surv. India.
Bist. Vijaya,	1993	Impact of Modern Tourism on Rajasthan Environment , (unpublished thesis, Department of Geography, University of Rajasthan).
Bithu, B.D.	1998	Pasture development as a sustainable alternative to intensive agricultural in Thar Desert: In Pasture & Pastoralism in desert. Ed. by S.M. Mohnot & Rollefson. Scientific Publishers, Jodhpur
Blandford, W.T.	1888-1891	The Fauna of British India. Including Ceylon and Burma. Mammalia. V. Taylor and Francis, London.
Bohra, H.C., Goya, S.P. Ghosh, P.K. and Prakash, I.	1992	Studies on ecology and ecophysiology of the antelopes in the Indian desert. Ann. Arid Zone.
Boniface, Priscilla	1995	Managing Quality Cultural Tourism London (Routledge).
Bulter, E.A.	1878	My last notes on the avifauna of Sind. Stray Feathers.
Borai, D.C., Hyma, B. & G. Wall	1978	Tourism and recreation in a developing area: The Case of Tamilnadu, India, India Geographical Studies, Research Bulletin, No. 11.
Chakravarti, P K	1998	"Changing Scenario of Recreation in Darjeeling-Sikkim Himalayas and Foot Hills", Geographical Review of India, Vol. 60, No.4, Dec. 1998.
Chouhan, T.S	1988	Integrated Area Development of Indian Desert. (Geo-Environ Academia), Jodhpur.
Chouhan, T.S.	1993	Rajasthan Atlas, (In Hindi), Vigyan Prakashan, Jodhpur
Chouhan, T.S.	1994	Geography of Rajasthan, Vol.. 1 and 2, Vigyan Prakashan, Jodhpur.
Chouhan, T.S.	1994	Natural and Human Resources of Rajasthan, Scientific Publisher, Jodhpur
Chib, Sukhdev Singh,		This Beautiful India-Rajasthan; Punjab University, Chandigarh High and Life Publishers, New Delhi
Cooper, C.P. & Boniface B.G.	1987	he Geography of Travel & Tourism; Heinemann Professinal Publishing Ltd., Oxford
Census of India	2001	Directorate of Census Operations Rajasthan.
Datt, Narayan and Mridula,	1991	Ecology and Tourism. (Universal Publishers Distributors), New Delhi
Dhir, R.P., Kar, A., Wadhawan, S.K., Rajguru, S.N., Mishra, V.N., Singhvi, A.K. and Sharma, S.B.	1991	Thar Desert in Rajasthan: Land, Man and Environment. (Eds. Singhvi, A.K. and Kar, A.). Bangalore (Geological Soc. of India).
Directorate of Tourism Rajasthan	1992	Directorate of Tourism Rajasthan Forty Years of Tourism
Director, Z.S.I. (ed.)	1991.	Animal Resources of India. Protozoa to Mammalia: State of the Art. Z.S.I. Calcutta.
Edington, J.M. & Edington, M.A.,	1986.	Ecology, Recreation and Tourism, Cambridge University Press,
Erskine, K.D.	(reprinted 1992)	19-08 a. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. Gurgaon (Vintage Books)
Erskine, K.D.	(reprinted 1992)	19 08 b. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. Gurgaon, (Vintage Books).
Ferguson, A.F.	1996	Detailed Report on the Area Development Plan for the Desert Triangle. Department of Tourism, Art and Culture, Govt. of Rajasthan. plus appendices 3.
Frame, Bob., Victor, J. and Joshi, Y	1993	Biodiversity Conservation Forests, Wetlands and Desert. New Delhi (Tata Energy Research Inst. and British Council).
Gehlot, Jagdish Singh	1981	Rajasthan; Rajasthan Sahitys Mandir, Sojati Gate, Jodhpur
Gadgil, M. and Vartak, V.D.	1976	The society of groves of Western Ghats in India. Economic Botany.
Ghosh, A.K. Baqri, Q.H. and Prakash, I.	1996	Faunal Diversity in the Thar Desert: Gaps in Research. (Scientific Publishers) Jodhpur
Government of Rajasthan, Jaipur	2002	Statistical Abstract Rajasthan, Directorate of Economic & Statistics,
Government of Rajasthan	1996	Rajasthan State Gazetteer- Volume Five, Places of Tourist Interest, Directorate of District Gazettess Jaipur, 1996.
Government of Rajasthan, Jaipur	1994	Resume Atlas of Rajasthan, Department of Science & Technology

Goriup, P.D. and Vardhan, H. (eds.)	1980	Bustrards in Decline. Tourism and Wildlife Society of India, Jaipur.
Gupta, P.D.	1977	Faunal Composition of Rajasthan. In the Natural Resources of Rajasthan (Ed. M.L. Roonwal), Vol. 1. Jodhpur University Press, Jodhpur.
Gupta, R.K. and Prakash, I.	1975	Environmental Analysis of Thar Desert. Dehra Dun, (English Book Depot).
Harrison, David,	1992	Tourism and the Less Developed Countries. (Belhaven Press), London
Hora, S.L.	1952	The Rajputana Desert: Its value in India's economy. Bull. Nat. Inst. of Sci., India.
Ilika, Chakravathy	1999	"Tourism and Regional Development: A Case Study of Maharashatra", Indian Journal of Regional Science, Vol. XXXI, No. 2, 1999.
Ishael. S. & Sinclair. T. (eds.)	1991	Rajasthan, A.P. Publications, H.K. Ltd. Singapore
Institute of Development Studies	2003	Rural Tourist of India- Social Economic Dimension, Institute of Development Studies, Jaipur.
I.T.D.C.	1975	Guide to Rajasthan, I.T.D.C., New Delhi
Jafari J.,	1974	The Socio-Economic Costs of Tourism to Developing Countries: Annals of Tourism Research,.
Jayashree, K. and Chitra, G.R.	1999	"Mariana Beach of Chennai, India: A Perception Study on Tourism Visualisation", The Indian Geographical Journal, Vol. 74, No. 2, Dec 1999.
Jain, Kailash Chand		Ancient Cities and Towns of Rajasthan: Motilal Banarsidas, Delhi Varanasi, Patna.
Kanodia, K.C. and Patil, B.D.	1982	Pasture Development In : Desert Resources and Technology (Ed. by A. Singh), (Scientific Publishers) Jodhpur
Khoshoo, T.N.	1994	India's biodiversity: Tasks ahead. Curr. Sci.
Kolarkar, A.S., Murthy, K.N.K. and Singh, N.	1983	Khadin - a method of harvesting water for agriculture in the Thar Desert. J. Aric. Env.
Kumar, Maneet.	1992	Tourism Today: An Indian Perspective. (Kanishka Publishing House), New Delhi
Kala, V.	1973	Rajasthan Pocket Diary; Vikas Kiran Publications, Jaipur
Khoshoo, T.N.	1984	Environment and Tourism; Environmental Concerns and Strategies
Kandari, O P, T.V. Singh	1980	Corbett National Park: Studying Impact of Tourism and Development Activities. Tourism Recreation Research, June.
Kaur, J.	1982	Using Himalaya Ethenic Attractions and Folk Traditions for Tourism: A Case of Garhwal, Tourism Recreation Research.
Kayastha, S L & S N Singh	1977	The Utilisation of Human Resources: A Spatial Analysis of Manufacturing Employment in Eastern U.P., The Naitonal Geographical Journal of India, Vol. 23.
Law, Chirstopher, M. (ed.).	1996	Tourism in Major Cities. Boston (International Thomson Business Press).
Laws, Eric	1995	Tourist Destination Management Issues, Analysis and Policies. London. (Routledge).
Lundberg, Donald, E	1972	The Tourist Business. Chicago. (Institutions Volume Feeding Management Magazine).
Majupuria, T.C (ed.)	1986	Wild Life Wealth of India. (Tecpress Services, L.P.) Bangkok
Malhotra, S.P.	1988	Man and the Desert. In Desert Ecology (Ed. by Prakash, I.). Jodhpur (Scientific Publishers).
Mathur, C.M.	1960	Forest types of Rajasthan, Indian Forester, Vol. 65
Mathur, N. and Dodson, R. (ed.)	1994	Tourism: Concepts and Researches. IJMT Publicatiojn, Jodhpur.
Mathur, N.	1995	Tourism the Next Decade. Jodhpur. IJMT Publication.
Mathur N. and Dodson, R. (ed.)	1992	An Approach to Tourism Management. IJMT Publication, Jodhpur,
Mathur, N. and Dodson, R.	1993	Tourism and Socio-economic System. Int. J. Manag. Tour.
Mc Intosh, G.	1990	Tourism: Principles, Practices and Philosophies. (John Wiley & Sons Inc.), New York
Mohnot, S.M. and Bhandari, M.M. (ed.)	1986	Environmental Degradation in Western Rajasthan. (Jodhpur University Press), Jodhpur
Monhot, S.M. and Jaitly, H.	1994	A Profile of Sandstone Mine Workers of Jodhpur and Dust Born Diseases. Published by GVVS. Raja Offset Printers, Jodhpur.
Mohnot, S.M. and Rajpurohit, L.S.	1990	The Old Water System of Jodhpur. (INTACH & SDS, Jodhpur
Murry, J.A.	1886	The Reptiles of Sind. The Education Society Press, Bombay.
Mathieson, Alister & Wall, Geoffrey,	1982	Tourism-Economic, Physical and Social Impacts, Longmann, London, New York
Mehla, Hanuman	1997	Industrial growth and potential of Shekhawati, (unpublished thesis, Department of Geography, University of Rajasthan).
Noy - Meir, I.	1973	Desert Ecosystems : Environment and Producers. Ann. Rev. Eco. Sys
Negi, J. Dr.	1980	Tourism Development and Resource Conservation: Metropolitan Book Co., New Delhi.
Nilima Jauhari	1991	Conference on Development Reconsidered January 12-14, 1991, Jaipur Planning for Tourist- An approach, SID Raj. Chapter Jaipur.
Oppermann, M. and Chon, Kye-Sung	1997	Tourism and Developing Countries. London, Int. Thomson Business Press.
Pandey, A.K.	1995	Taxonomy and Biodiversity. CBS Publishers & Distributors, New Delhi.
Panwar, L.K.	1986	The Battle of Survival in Jaisalmer: Seven Story, in Environmental Degradation in Western Rajasthan (Ed. by Mohnot, S.M. and Bhandari, M.M.), (Jodhpur Univ. Press).
Panwar, L.K.	1997	Developing rural tourism for socioeconomic development in rural areas of Rajasthan through Panchayati Raj Institutions (PRIs), Int. J. Mang. Tour.
Pearce, D.G. and butler, R.W. (ed.).	1993	Tourism Research Critiques and Challenges (Reutledge), London
Popelka, C.A. and Littrell, M.A.	1991	Influence of Tourism of Handicraft Evdution Int. J. Manag. Tour.
Prakash, I.	1975	The Ecology and Zoogeography of Mammals. In Environment Analysis of Thar Desrt. English Book Depot, Dehra Dun
Prakash, I.	1982	The living Thar desert. Sanctuary.
Prakash, I. (Ed.).	1988	Desert Ecology., Scientific Publishers, Jodhpur
Prakash, I.	1994	The hunting desert. Hornbill.

Prakash, I.	1994	Biodiversity Conservation in the Thar Desert. Indian For.
Prakash, I. and Ghosh, P.K.	1980	Human animal interactions in the Rajasthan desert. J. Bombay nat. Hist. Soc.
Pal, H. Bishan		The Temples of Rajasthan; Prakash Publishers, Jaipur
Pearce, D.	1987	Tourism Today, A Geographical Analysis, Longman Group, U.K. Ltd
Rahmani, A.R.	1986	The great Indian Bustrard in Rajasthan. Tech. Report No. 11, Bombay nat. Hist. Soc., Bombay.
Robinson,H.	1976	A Geography of Tourism, Macdonals & Evans, London
Richard and Sharpley Julia	1997	Rural Tourism: An Introduction, London, Int. Thomson Business Press.
Rodgers, W.A. and Panwar, H.S.	1988	Planning Wildlife Protected Area Network in India. Wildlife Institute of India. Dehra Dun. Vol. 1 (The report).
Roonwal, M.L. (Ed.).	1977	The Natural Resources of Rajasthan. (Univ. of Jodhpur Press), Jodhpur
Sankhala, K.	1964	Wildlife sanctuaries in Rajasthan. J. Bombay Nat. Hist. Soc.
Seth, P.N.B. and Sushma, Seth	1993	An Introduction to Travel and Tourism, (Sterling Publishers Pvt. Ltd.), New Delhi.
Shackley, Myra	1996	Wildlife Tourism. (Inst. Thomson Business Press), London
Sharma, K.C.	1996	Tourism: Policy, Planning and Strategy.. (Pointer Publishers), Jaipur
Shaw, James	1985	Introduction to Wild Life Management.. (Mc Graw-Hill Book Company), New York
Singh, Tej Vir, Kaur, Jagdish and Singh, D.P.	1992	Studies in Tourism Wildlife Parks Conservation.. (Metropolitan Book Company Pvt. Ltd.), Delhi.
Singh, A K	1976	Tourist Industry in Bihar The Deccan Geographer, VOl. 14.
Singh, T.V.	1982	Garhwal Himalaya: Sacred Sites and Secular Seers. Tourism Recreation Research
Singh, Tej Vir	1980	Impact of Tourism on Environment : A partial analysis of Uttarkhand Himalaya. The National Geographical Journal of India, Vol. 26,
Singh, Tej Vir, Kaur, Jagdish	1978	The Valley of Flowers in Garhwal: A Case for a Biosphere Reserve. The Journal of Himalaya Studies and Regional Development, Vol. 2.
Smith, L.J. Stephen,	1989	Tourism Analysis: A Hand Book. New York. (Longman Scientific and Technical).
Soni, R.G.	1994	Checklist of birds of Indira Gandhi Nahar Project. Stage-II (Rajasthan), Indian
Sharma, Dasharatha		Rajasthan Through the ages.
Singh, R.B.,		Tourism Development Environment Monitoring and Remote Sensing, Studies in Environment and Development; Common Health Publishers, New Delhi.
Sood, Vibha Krishen	1999	"Impact of Tourism on the Social-Cultural Step of Ladakh", Geographical Review of India, Vol. 61, No. 2, June 1999.
Surendra Kumar,	1991	Conference on Development Reconsidered, January 12-14 1991, Jaipur Strategy for Development of Tourist and Handicraft in Rajasthan, Surendra Kumar, SID Raj. Chapter.
Surjit Singh	2003,	Tourist in Rajasthan- Some insights, Institute of Development Studies, Jaipur.
Thakur, P S	198	Kullu Valley: The Tourist Paradise. The Geographical Observer, Vol. 16,
Thangamani, K	1976	Ootacamund: The Sweet Daughter of the Nilgiris. The Tourism Research, Vol. 1.
Thangamani, K	1980	Tourist Behaviour, Economy and Area Development Plan, Ph.D. Thesis, Mysore University.
Tourism Highlights	1996	In International Tourism Overview, WTO Publication Unit, Madrid.
Vasantha, Kumaran T.	1998	"The Application of Geographical Information Systems (GIS) in Tourism", The Geography Teacher, Vol. 5, No. 5, 1998/1999.
Vishwanathan, Prema.	1996	Economic Contribution of Tourism Section, New Delhi, Indian Express, Jan. 1996.
WTO.	1993	Global Tourism Forecasts to the Year 2000 and Beyond: Executive Summary. Madrid, World Tourism Organisation.

1 राजस्थान का भूगोल डा. तेजसिंह चौहान विकास प्रकाशन जोधपुर
2 राजस्थान सुजस, राजस्थान सरकार , जयपुर
3 राजस्थान का वन्य जीवन, एस. के. वर्मा आई. एफ.एस. आकांक्षा प्रकाशन जयपुर
4 भारतीय रेगिस्ताान के पर्यावरणीय पर्यटन डा. ललित के. पंवार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
5 राजस्थान दर्शन, पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार
6 नागौर जिला दर्शन, राजस्थान सरकार
7 जालौर उत्सव 2001, जालौर उत्सव आयोजन समिति जालौर
8 प्रगति प्रतिवेदन 2003–04 पर्यटन विभाग राजस्थान
9 राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा ;मकण्द्धए 1998 डा. जयसिंह नीरज व डा. वी.एल.शर्मा राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
10 राजस्थान का भूगोल 1998 सम्पादक डा. महेश नारायण निगम, डा. अमित कुमार तिवारी राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर